ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 27 | फरवरी-I-2025 | अंक - 21 | माउण्ट आबू | Rs.-12

ब्रह्माकुमारीज़ : महाकुम्भ मेले में स्वर्णिम भारत ज्ञानकुम्भ पंडाल का आगाज़

श्रेष्ठ संस्कारों के बिना स्वर्णिम भारत नहीं हो सकता

प्रयागराज-उ.प्र.। महाकुम्भ मेले में ब्रह्माकुमारीज़ के स्वर्णिम भारत ज्ञानकुम्भ पंडाल का आगाज़ हुआ। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने पूरा पंडाल का उद्घाटन किया और पंडाल का अवलोकन करने के पश्चात् भावविभोर हो गये और कहा कि श्रेष्ठ संस्कारों के बिना स्वर्णिम भारत साकार नहीं हो सकता। यह कार्य ब्रह्माकुमारी बहनें ही कर सकती हैं। उन्होंने आगे कहा कि पंडाल में स्वर्णिम भारत की जो कल्पना की है उसमें यह दर्शाया गया है कि जीवन में जो विकृतियां आती हैं उनको चरित्र के माध्यम से दूर किया जा सकता है। श्रेष्ठ जीवन किस प्रकार से जी सकते हैं वह भी दर्शाया गया है। यह प्रयोजन अद्भुत है। मैं इस कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामना देता हूँ और मानव उत्थान के कार्य के लिए ब्रह्माकुमारी बहनों का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। उत्तर प्रदेश के पूर्व शिक्षा मंत्री नरेंद्र कुमार गौर ने कहा कि इस विश्व विद्यालय द्वारा अन्य संस्था की तरह आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती है। लेकिन सबसे बड़ा जो कार्य यह विश्व विद्यालय करता है वह है व्यक्तित्व निर्माण। समाज व राष्ट्र के लिए व्यक्ति का क्या दायित्व है इसके लिए यह विश्व विद्यालय कार्य करता है, यह बड़ी बात है। हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के चरित्र निर्माण की कोई फैक्टरी है तो वह माउण्ट आबू में है। आप सबके सामने है। जिसकी आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारीज़ के इस कार्य के लिए मैं बधाई देता हूँ। ज्ञानकुम्भ मेले की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी ने उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक का स्वागत किया और कहा कि ये स्वर्णिम भारत सिर्फ कल्पना ही नहीं बहुत जल्दी आने वाले भारत का भविष्य है। जहाँ लड़ाई-झगड़े व बुराई का नामोनिशान भी नहीं रहेगा। उल्लास नगर उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सोमप्रभा दीदी ने कहा कि यह सब महिमा है सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की। उसी परमपिता परमात्मा ने आकर इस विश्व को सुन्दर बनाने का कार्य आरंभ किया है। जो हम सब बच्चों के लिए एक उपहार है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भारत फिर से विश्व गुरू बनेगा। महादेव नगर अहमदाबाद सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक महिला द्वारा संचालित विश्व का सबसे बड़ा संगठन है। जिसकी शाखाएं लगभग 140 देशों में है जोकि चरित्र निर्माण की सेवा में तत्पर है। आज विद्यालय में लाखों भाई-बहनें अपने श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण कर भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में शांति का कार्य कर रहे हैं। ये कार्य परमपिता द्वारा चल रहा है और उसी का संदेश देने हेतु ये विशालतम स्वर्णिम भारत ज्ञान कुम्भ को यहाँ दर्शाया गया है। कार्यक्रम में भारत एक्सप्रेस न्यूज़ चैनल के एडिटर इन चीफ उपेंद्र राय, गोमतीनगर,लखनऊ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. राधा, मधुबन न्यूज़ के चीफ एडिटर ब्र.कु.कोमल व कल्याणपुर,कानपुर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सुमन उपस्थित रहे।

प्रयागराज-उ.प्र.। स्वर्णिम भारत महाकुम्भ मेले में ज्ञान कुम्भ पंडाल का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए उत्तर प्रदेश के माननीय उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक, ब्रह्माकुमारीज़ धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी, स्वामी ओमानंद जी महाराज, गुजरात उपक्षेत्रीय संचालिका व युवा प्रभाग की उपाध्यक्षा,राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी, उल्लास नगर उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सोमप्रभा दीदी, पूर्व शिक्षा मंत्री नरेन्द्र सिंह गौर तथा भारत एक्सप्रेस न्यूज़ चैनल के एडिटर इन चीफ उपेंद्र राय।

यहाँ आने पर सकारात्मक ऊर्जा का संचार स्वतः ही होता है : स्वामी ओमानंद

स्वामी ओमानंद ने कहा कि इस परम पावन अवसर पर, इस परम पावन भूमि पर ये जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय है यह संगम पर संगम मिला दिया है। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय चमत्कारी है। यहां आ गये यह हमारा भी सौभाग्य रहा। हमने अन्दर जाकर देखा तो हृदय की जो शक्तियां सुषुप्त अवस्था में चली गईं थी वह अपने आप जागृत होने लगीं। आप भी जब पंडाल देखने जायेंगे तो अन्दर की सुषुप्त शक्तियां जागृत होने लगेंगी केवल दर्शन मात्र से।

जीते जी कड़े संस्कारों को बदलें जो हम साथ ले जाएगें

जयपुर-राजापार्क(राज.)। दीप स्मृति ऑडिटोरियम में इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी ने शहरवासियों को खुश और हेल्दी रहने के फॉर्मूले बताए। उन्होंने कहा कि खुश रहने के लिए सोच, संस्कार और कर्म बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसी के आधार पर बच्चों का ध्यान प्राथमिकता से रखना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि व्यक्ति जिस तरह से जीता है, वैसा ही इस दुनिया से जाता है। जिसने जीते हुए गांठ-गांठे की हुई हैं, उसे जाते समय भी दिक्कत होगी। वो अपने साथ गांठे लेकर ही जाएगा। आत्मा अपने साथ संस्कार लेकर जाती है। इसलिए व्यक्ति को कर्म और संस्कार पर ध्यान देना चाहिए। शिवानी बहन ने आगे कहा कि खुश रहना है तो यह मत बोलो, मेरे पास टाइम नहीं है। मैं बहुत बिजी हूँ। यही बात खुशी को घटाती है। वर्क, फैमिली और सेल्फ के बजाय, सेल्फ, फैमिली और वर्क पर फोकस करें। इससे क्षमता बढ़ेगी। काम बेहतरीन तरीके से कर पायेंगे। हमें सिर्फ पैसा ही नहीं, खुशी भी कमाना है। इससे हेल्थ अच्छी हो जाएगी। नये साल पर सभी एक-दूसरे को हैप्पी न्यू इयर का मैसेज देते हैं। हम दूसरों को खुशी और आशीर्वाद देते हैं। इस बार खुद को खुशी दें, यह तय करें। ऑफिस से घर पहुंचने पर रात आठ बजे बाद अपने काम से डिसकनेक्ट हो जाएं। टीम लीडर को यह करना चाहिए। वह रात 8 बजे बाद साथियों को डिस्टर्ब न करे। क्योंकि आजकल व्यक्ति 7-8 घंटे की नींद तो ले रहा है, लेकिन वह गहरी नहीं है। ज़िंदगी में खुश रहने के लिए हमें 30 साल पुरानी लाइफस्टाइल को गैजेट्स का यूज़ करते हुए अपनाना होगा। पढ़-लिख लो, कुछ बन जाओगे तो खुश रहोगे। बचपन से ही यही सिखाया जा रहा है। फिर भी व्यक्ति खुश नहीं है, खुशी पढ़ाई, स्टेटस और मान-सम्मान से नहीं आती है। दुनिया खुशी खरीदने के लिए बहुत पैसा खर्च कर रही है। कमाना ज़रूरी है, लेकिन इससे भी खुशी नहीं मिलती। मान-सम्मान से पद मिलता है, खुशी नहीं। खुशी में रहने के लिए दिनभर सही विचार आने चाहिए। सही विचार ही हमें खुशी देते हैं। यदि हम खुद थके हुए हैं तो दूसरों को खुशी कैसे देंगे! उन्हें खुशी तब मिलेगी जब हम सारे काम करते हुए खुश रहेंगे। राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम दीदी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

गुलाबी नगरी स्थित 'दीप स्मृति ऑडिटोरियम' में जगाये खुशियों के दीप

- खुशी, पद-पोजिशन से नहीं मिलती उसके लिए दिनभर मन में खुशी के विचार करने से मिलती है।
- वर्क, फेमिली, सेल्फ के बजाए, सेल्फ, फेमिली, वर्क पर फोकस करें।
- ऑफिस से घर पहुंचने पर रात आठ बजे बाद अपने काम से अपने को डिस-कनेक्ट करें।
- 7-8 घण्टें नींद तो लेते हैं परंतु उससे वह गहरी नींद में बदले।
- सुबह उठते ही अपने मन-मस्तिष्क को खुशी के विचारों से चार्ज करें।
- मेरे पास टाइम नहीं है। मैं बहुत बिजी हूँ। यही बात खुशी को घटाती है।
- उठते ही संकल्प करें...
  मैं शक्तिशाली हूँ... मैं भाग्यशाली हूँ...
  मैं खुशनसीब हूँ... मैं स्वस्थ हूँ...
  मेरे अच्छे संबंध हैं... मैं यूनिक आत्मा हूँ...

अपनी मेमोरी को महान बनायें

स्टूडेंट और पढ़ाई एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह हैं। पढ़ाई का मतलब सिर्फ रीड करना नहीं बल्कि उसे पढ़ना और उसे दिमाग में समाना भी है अर्थात् जिसे हम अपनी मेमोरी में रजिस्टर करना कह सकते हैं। मेमोरी पॉवर को शार्प करना या अपने ज्ञान की वृद्धि करना उसके लिए मुख्यतः तीन बिन्दुः- रजिस्टर, रिटेन व रिकॉल पर सोचेंगे और समझेंगे।

जो भी हम पढ़ते हैं, देखते हैं, सुनते हैं उसे सबसे पहले अपनी मेमोरी में रजिस्टर करना ज़रूरी है। इन्फॉर्मेशन कहां से किसी भी ओर से आती है। सुनने से, देखने से और स्पर्श करने से उसे हूबहू अपनी मेमोरी में रजिस्टर करना यानी कि अपने अन्दर प्रवेश करना है। कई बार कहते हैं ना! टीचर ने सुनाया था लेकिन पूरी तरह से याद नहीं आ रहा, आधा-अधूरा याद आता है। इसका मतलब है कि वह ज्ञान व इन्फॉर्मेशन विधि पूर्वक रजिस्टर नहीं हुआ, अपने मेमोरी में ठीक तरह से दर्ज नहीं हुआ।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

दूसरी बात जो मेमोरी में रजिस्टर किया है उसे रिटेन करना भी उतना ही आवश्यक है। माना कि उसे मेमोरी बैंक में उसी तरह जमा करना। साथ ही उसे व्यवस्थित रूप से सार-सम्भाल करना ताकि हमें उसकी ज़रूरत हो तब उसका उपयोग कर सकें। ठीक उसी तरह जैसे बैंक में जमा की हुई राशि। वे हम तब कर सकेंगे जब उसे उचित तरह से रखा होगा और समय प्रति समय हमने देखा होगा। कहीं वेदर की चपेट में वो खराब या नुकसान तो नहीं हो गया! अगर वो खराब हो गया तो वक्त पर उपयोग करना चाहें तो कर नहीं सकेंगे।

मेमोरी को रि-कॉल करना परम आवश्यक है जितना की रिटेन करना। रि-कॉल का मतलब है कि जो हमने मेमोरी बैंक में जमा किया है उसे उसी रूप में चेक करना, उसे समझना, उसी स्वरूप की अनुभूति करना, रियलाइज़ करना है। जैसे एक सोल्जर अपने अस्त्र-शस्त्र की देखभाल करता, उसको यूज़ करके देखता और साथ ही साथ उनका अभ्यास भी करता। उसी तरह एक तेजस्वी छात्र भी समय प्रति समय जो पढ़ा है, सुना है उसे अपनी तरह से खुद ब खुद पेपर लेता है और उसे छुड़ाता है। क्योंकि जो मेमोरी में है वो उसे याद है और उसका उपयोग व प्रयोग कब, कहाँ, कैसे और उचित समय पर करना है। ताकि रियल में परिक्षा में उसे छुड़ा व सोल्व कर सके। इस तरह करने से उनका निजी विश्वास बन जाता है और अपनी तैयारी करने के कारण घबराता नहीं। ये उनका अनुभव बन जाता है। ऐसा बार-बार करने से वो सही तरह से उसका इस्तेमाल कर सकेगा। उसके विपरित अगर बैंक में जमा कर दिया और उसे देखा ही नहीं, स्मृतियों में लाया ही नहीं तो समय पर धोखा ही मिलेगा ना!

श्रेष्ठ विद्यार्थी वह है जो मिले हुए ज्ञान का मनन करता, चिन्तन करता और मंथन भी। क्योंकि बार-बार मानस पटल पर लाने से वो स्मृतियां तरो-ताज़ा रहती है। और उसे उचित समय पर इस्तेमाल भी कर सकता है। जैसी परिस्थिति वैसी ही स्मृति को रि-कॉल कर उस परिस्थिति में उपयोग व प्रयोग कर उसे पार कर लेगा। अर्थात् बाह्य परिस्थितियों के प्रभाव से मुक्त रहकर उसे हैंडल भी सही तरह से कर सकेगा। यानी कि वो सहज, सरल और शान्तचित्त स्थिति से बिना विचलित हुए आगे बढ़ेगा। घबरायेगा नहीं, हलचल में नहीं आयेगा। क्योंकि उनकी तैयारियों पर उसका पूरा भरोसा और विश्वास होने के कारण परिस्थिति में भी पराक्रम का अनुभव करेगा। परिणाम स्वरूप वह हिम्मत, उमंग-उत्साह और खुशी से झूमेगा और ज़्यादा शक्तिशाली महसूस करेगा।

हम जीवन में जो भी देखते हैं, सुनते हैं उसी बताई हुई विधि से अगर अपनी मेमोरी को, मेमोरी बैंक को समय प्रति समय सार-सम्भाल भी करेंगे और उसका अभ्यास करेंगे और साथ-साथ मनन-चिन्तन करते रहेंगे तो कभी हार नहीं होगी। सफलता उसे सदा आगे बढ़ाने का जज़्बा पैदा करेगी। उनकी चाल और चलन में खुशी की झलक दिखाई देगी। ठीक है ना, क्या सोच रहे हैं! अगर आपको विधि समझ में आई है तो आप उसे अपनायें और श्रेष्ठतम लक्ष्य की ओर तीव्रता से हिम्मत का कदम बढ़ाये।

हमारे प्रश्न और दादी जी के उत्तर

प्रश्नः- हम स्वयं को निमित्त भी समझते, यह भी संकल्प रहता कि बाबा और हम कम्बाइन्ड रूप से कार्य कर रहे हैं, क्या फिर भी सूक्ष्म अभिमान आ सकता है?

उत्तरः- अगर थोड़ी महिमा के इच्छुक होंगे तो अभिमान आ सकता है। जिसको महिमा की इच्छा नहीं है, कार्य हुआ, ड्रामानुसार हुआ, बाबा ने कराया, वह इन्तज़ार नहीं करता कि औरों का मेरे प्रति क्या कॉमेन्ट्स है। लोगों को अच्छा लगा, वाह-वाह की तालियां बजाई, खुश हुए... वो नहीं हुआ तो अपमान की फीलिंग आयेगी। इतना कुछ किया कदर कुछ भी नहीं है, लोगों ने कॉमेन्ट्स भी नहीं दिया, थैंक्स भी नहीं दिया। यह सूक्ष्म ख्याल आना अभिमान की निशानी है। सदा यह देखें, कार्य हुआ, ड्रामानुसार बहुत अच्छा हुआ, सबको बाबा की याद आई, अच्छा हुआ। अभिमान आने का रास्ता है महिमा की भूख। कोई कहे न कहे, लेकिन बाबा हमारे से एक्यूरेट कराये, यह हमारे कॉन्शियस में हो।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

प्रश्नः- हेल्थ चार्ट के अनुसार कहा जाता है हमको कुछ फिज़िकल एक्सरसाइज़ करना चाहिए ताकि स्वास्थ्य ठीक रहे। ब्रह्माकुमार-कुमारी किसी भी प्रकार का हठयोग क्यों नहीं करते, इसका कारण क्या है?

उत्तरः- एक्सरसाइज़ करने की मना नहीं है। परन्तु राजयोग की जो एक्सरसाइज़ है वह पूरी तरह से करो जिससे तन भी ठीक हो, मन भी ठीक हो। सभी डॉक्टर्स कहते हैं बिमारियों का कारण है मन। तो मन की भी एक्सरसाइज़ करो। अपने खान-पान की भी सम्भाल करो। सुस्ती, अलबेलाई, उल्टा लटकना, सीधा लटकना इसकी आवश्यकता नहीं है। साइलेन्स में शान्ति से दौड़ भले लगाओ, साइलेन्स में सैर करो बाकी हठयोग की आवश्यकता नहीं है। मन्मनाभव होकर तन-मन को हेल्दी बनाने की एक्सरसाइज़ करो। साइलेन्स में बैठने से श्वास भी जो चलता है वो शान्ति वाला चलता है। संकल्प भी शुद्ध हो जाते हैं। वायुमण्डल बहुत अच्छा हो जाता है। अगर उसका हम अभ्यास नहीं करते हैं सिर्फ वो करते है तो इसकी वैल्यू का पता ही नहीं है। बाबा साइलेन्स वॉक सिखाता था। आवाज़ करने की आदत न हो तो शक्ति आती है। कर्मयोग में कभी भी सुस्ती या बहाना न दो तो सदा हेल्दी रहेंगे। माइन्ड भी हेल्दी, बॉडी भी हेल्दी।

प्रश्नः- बाबा कहते हैं सेकण्ड में जीवनमुक्ति प्राप्त होती है, इसका अर्थ क्या है? सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिलने के बाद उससे जीवन में क्या प्राप्ति होती है?

उत्तरः- जीवनमुक्ति का जो रस है, वह रस लेने में कितना मिनट लगता है? एक सेकण्ड में आप साइलेन्स में जाओ, लगता है सेकण्ड। मैं जीवन में हूँ, लेकिन फ्री हूँ। कहाँ बुद्धि खिंचती नहीं है। बहुत फायदा होता है। खुशी आती है, शान्ति आती है, शक्ति आती है। लगता सेकण्ड है। लाइट आने-जाने में कितना सेकण्ड लगता है? सिर्फ जोड़ने का ढ़ग चाहिए। अपनी भी लिंक बाबा से अच्छी जुड़ी रहनी चाहिए। सतयुग में होंगे ही जीवनमुक्त। यहाँ कलियुग में बंधनों से मुक्त होकर फ्री हैं। देह का भी बंधन नहीं है, रस्म-रिवाज़ का भी बंधन नहीं है, स्वभाव का भी बंधन नहीं है, संस्कार का भी बंधन नहीं है, किसी आदत से मजबूर हम नहीं हैं। किसके मजबूर हम नहीं हैं, फ्री हैं। श्रेष्ठ कर्म करने के लिए कोई रोक नहीं सकता है। ज्ञान-योग ऐसा है, जिसमें माया भी विघ्न नहीं डाल सकती है। यह है जीवनमुक्ति का सुख। फिर कहेंगे बाबा ने इतना अच्छा वर्सा दिया जो मैं जीवन में होते भी मुक्त हूँ।

साइलेन्स में रह बाप को याद कर मूड ऑफ को ऑन कर अंधकार से प्रकाश में आयें

बाबा ने हमें अमृतवेले से रात तक हर कर्म करने के ज़िम्मेवार बनाया है। किसी कारण से अमृतवेले नहीं उठते परन्तु ये भी सोचा कि मेरे उठने से कितनों को प्रेरणा मिलती है! ये प्रेरणा मिलना ही वरदान है। ऐसे ही अनासक्त-पन की जीवन देखकर सब सीखेंगे। थोड़ी घड़ी के लिए मेरे में सुस्ती है, तबियत के कारण या मेरी नेचर सुस्त है, क्या मेरी सुस्ती की नेचर औरों को प्रेरणा देगी या उसे बेमुख करेगी? सुस्ती के कारण मैं किसी को बेमुख करूं या मैं अपना मूड ऑफ अर्थात् स्विच ऑफ करके अंधकार कर दूं, तो उसका कितना बुरा प्रभाव दूसरों पर पड़ेगा। कई तो बड़े फलक से कहते हैं कि आज मेरी मूड ऑफ है। जैसे बाबा ने कहा ओम शान्ति। हम कहते मूड शान्ति। अगर कोई कारण से मूड ऑफ भी हुई तो उसे बाबा की याद से सेकण्ड में अंधकार से प्रकाश कर देते हैं, हम साइलेन्स की शक्ति से मूड शान्त नहीं कर सकते?

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हम सब ओपन थियेटर में बैठे हैं, हमें सारी दुनिया देख रही है, हम बाबा के बच्चे हैं, नूरे रत्न हैं, आँखों के तारे हैं, बाबा ने हमें नयनों पर बिठाया है, हम-आप साधारण नहीं हैं। लेकिन हम असाधारण अलौकिक हैं, हमारा बाबा निराला, हम भी निराले, बाबा हमेशा कहते बड़े तो बड़े छोटे शुभान अल्ला, आप सब बाबा की छत्रछाया, शक्ति के नीचे बैठे हो, नहीं तो आज का ज़माना बहुत खराब है, आप सब एक दृढ़ संकल्प लेकर बाबा की गोद में आये हो। तो अपने से रूह रिहान करनी है कि हमें बाप के समान बनना है, सम्पन्न बनना है, समीप रहना है।

जग को परिवर्तन करने वालों को पहले स्वयं को परिवर्तन करना है। मेरे जीवन का हमेशा लक्ष्य रहता बाबा की पहले दिन की श्रीमत है- आज्ञाकारी, फरमानबरदार, वफादार। दूसरा है त्याग, तपस्या और सेवा, इन सबका आधार है - श्रीमत। श्रीमत में रहने से हमारी तथा सर्व की सेवा है, इसमें ही कल्याण है।

ईश्वरीय मर्यादा कहती है तुम्हें अन्तर्मुख रहना है, मेरी पसन्दी है बाहरमुखता, अगर मैं अन्तर्मुख न रहूँ तो दूसरों को कैसे कहेंगे? तो ये कौन-सी मैंने सर्विस की? बाहरमुखता की मेरी नेचर है, अन्तर्मुखता बाबा की श्रीमत है, तो मुझे आज्ञाकारी बनना है। अगर नहीं रहती हूँ तो क्या मैंने आज्ञा का पालन किया या उल्लघंन किया? आज्ञा पालन करने में बाप का आशीर्वाद मिला, न करने में श्राप।

हमको सम्पन्न बनना ही है ये संकल्प लें

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम हिम्मत रखते हैं, बहादुरी भी करते हैं, लेकिन थोड़ा व्यर्थ संकल्प चलता इसलिए हमारे कर्तव्य में पूरी सफलता मिले वो थोड़ा कम हो जाता है।

हमको बाबा ने सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का मौका दिया है। बाबा कभी नहीं कहता था कि जाओ देखो, करो, फिर देखते हैं क्या होता है। पूरा निश्चय के साथ कहता था जाओ। हमारे साथ भगवान है इस निश्चय से हम करें तो क्या बड़ी बात है! आजकल सभी ट्रायल करते हैं, प्रैक्टिकल में इतना निश्चित निश्चिंत नहीं रहते हैं। अगर निश्चय है तो उसका प्रुफ है विजय होनी चाहिए क्योंकि कहावत है निश्चयबुद्धि विजयन्ती। यह जो तीन शब्द हैं निश्चयबुद्धि, निश्चित और निश्चिंत। यह प्रैक्टिकल में हम लायें तो क्या बड़ी बात है! आखिर तो विजय हमारी है, यह निश्चित है लेकिन विजय के लिए पुरुषार्थ करना पड़ेगा। सम्पन्नता माना हम सर्व खज़ाने जमा करें और वह सर्व खज़ाने समय पर काम में आवें। बाबा ने कहा था खज़ाने बढ़ाने की चाबी है, उनको जितना यूज़ करेंगे उतना खज़ाने आपके बढ़ेंगे। जैसे बाबा रोज़ अलग-अलग वरदान देते हैं और बहुत श्रेष्ठ वरदान देते हैं लेकिन वह प्रैक्टिकल लाइफ में नहीं आते हैं, उसका कारण क्या है? पढ़ करके हमको कितनी खुशी होती है लेकिन उसका प्रैक्टिकल में लाभ होवे, उसके लिए बाबा ने कहा वरदान है बीज। बीज फल कब देता है? जब पानी और धूप लगती है तभी फल देता है। आप भी रियलाइज़ करो, वर्णन करो, प्रैक्टिकल में लाओ तो फल देगा इसलिए हम लोगों को अभी हर खज़ाने के महत्व को जान करके सम्पन्न बनना है, भरपूर रहना है। खाली चीज़ हिलती रहेगी, सम्पन्न भरपूर रहती है वो हिलेगी, टूटेगी नहीं। इसलिए हमें आज यह संकल्प करना है - हमको सम्पन्न बनना ही है।

दूसरी बात- खज़ाने को जमा करने के तीन तरीके हैं। एक तो बाबा कहता है अपने पुरुषार्थ से जमा करना है, दूसरा बाबा कहता है कि सन्तुष्ट रहो और जिससे कनेक्शन में आते हो उसे सन्तुष्ट करो। तीसरा- निःस्वार्थ सेवा करो, बाबा करावनहार बन करा रहा है, तो मैंपन नहीं रहेगा, अगर यह धारणायें हमारी अच्छी हैं, तो खज़ाने जमा होते रहते हैं। तो हम अपने को चेक करें कि हम इन तीनों ही तरीके से खज़ाने को अमर-अविनाशी बना रहे हैं! अगर यह तीनों तरीकों से जमा नहीं कर रहे हैं तो समय पर काम में नहीं आयेंगे। समय पर यूज़ करने का अभ्यास हमको करना है।

बाबा कहता था कि हरेक के प्रति शुभ भावना रखो। भले मुख से न बोलो। लेकिन अन्दर से दिल से शुभ भावना देते रहो।

हिम्मत का कदम बढ़ाओ तो मदद मिलेगी ही

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

यह जो कईयों के मन में प्रश्न उठता है कि भगवान ऐसे क्यों नहीं करता? वैसे क्यों नहीं करता? कई व्यापारी लोग हैं, व्यापार के लिए पूछते कि ज्ञान में आने से पहले हमारी बहुत कमाई होती थी, व्यापार बहुत अच्छा चल रहा था। जब ज्ञान में आये तो बहुत नुकसान हो गया। बाबा ने हमारी मदद क्यों नहीं की? बाबा अगर तुम्हारा बिज़नेस बढ़ाता जाये तो सारे बिज़नेसमैन बी.के. बन जायेंगे। चलो, ब्रह्माकुमारी संस्था में जाने से भगवान तुम्हारा बिज़नेस बढ़ायेगा। खूब कमाई होगी। नहीं, ऐसा नहीं। बाबा हमेशा कहते हैं कि ये तुम्हारा काम है। लोग उम्मीद रखते हैं कि भगवान ही सब-कुछ करे। समझते हैं कि हर तरफ से भगवान हमारी मदद करेगा। मदद करता है लेकिन उसकी एक शर्त है कि हिम्मत करने वालों की मदद करता है। उनका वायदा है कि तुम थोड़ी-सी भी हिम्मत करोगे, उससे कई गुणा बढ़कर मैं तुम्हारी मदद करूँगा। यह निश्चित है। कभी भी जीवन में इस बात को मत भूलना। थोड़ा-सा भी कष्ट है, कभी रिंचक भी नहीं सोचना कि बाबा मदद नहीं कर रहा है या नहीं करेगा। यह असंभव है, उनका वचन अटल है। ऐसा है ही नहीं कि वह कहे, मदद करूँगा और न करे। लौकिक वाले नहीं पहुँचेंगे, पैसा काम नहीं आयेगा, डॉक्टरों की दवाई लगेगी नहीं, रोग बढ़ता जायेगा, तकलीफ आयेगी, तो भी व मदद करना नहीं छोड़ेगा। सब छोड़ देंगे लेकिन वो नहीं छोड़ेगा।

थोड़ा-सा भी कष्ट है, कभी रिंचक भी नहीं सोचना कि बाबा मदद नहीं कर रहा है या नहीं करेगा। यह असंभव है, उनका वचन अटल है। ऐसा है ही नहीं कि वह कहे, मदद करूँगा और न करे।

जब हमारा योग भगवान से ठीक रहेगा और बुद्धि की लाइन क्लीयर रहेगी तो मदद ज़रूर मिलेगी...

लोग समझते हैं कि मेडिटेशन से टेंशन दूर होता है, मेडिटेशन से वो होता है, यह होता है, शान्ति मिलती है। उसकी मोटी-मोटी उपलब्धि बताते हैं। भगवान जिसका साथी बन जाये, जिसकी छत्रछाया उसके ऊपर रहे और उसको गाइड करे, बुरे कामों से बचा दे, आगे के लिए अच्छे रास्ते पर लगा दे और वक्त पर उसे टच(प्रेरणा) करे तो उसका कौन क्या बिगाड़ सकता है! ये मदद कब मिल सकती है जब हमारा योग बाबा से ठीक रहेगा, बुद्धि की लाइन क्लीयर रहेगी। बाबा टचिंग करता है, यह भी बहुत बड़ी मदद है। क्या टचिंग करता है? बहुत दफा हमने अनुभव किया है। बाबा कहेगा, बच्चे, ऐसा करो, बच्चे वैसा करो। जब तक आप वो करेंगे नहीं, तब तक बाबा की आवाज़ टलेगी नहीं। ऐसी शक्तिशाली टचिंग आपकी बुद्धि में डालेगा कि वो मिटेगी नहीं। जब तक आप करेंगे नहीं तब तक वह आपके पीछे लगी रहेगी। फिर आप अनुभव करेंगे कि उसी में सफलता होती है। बाबा की यह भी मदद है। कई तरह की मदद होती हैं बाबा की। इसलिए निश्चिंत हो जाना चाहिए व्यक्ति को। सब बाबा के हवाले कर देना चाहिए। चिन्ताओं को भी बाबा के हवाले कर दो। वो कल्याणकारी बाप है, यह भूल गये क्या? जब वो भक्तों का कल्याण करता है तो बच्चों को भूल जाता है क्या? बच्चों का अकल्याण करेगा क्या? ऐसा हो सकता है? अगर भगवान भी किसी का अकल्याण करता है तो वो भी मनुष्य जैसा हो गया। वो मूडी(तुनकमिजाज) हो गया। मूड ठीक है तो कल्याण कर दिया और मूड ठीक नहीं है तो अकल्याण कर दिया। ऐसा तो नहीं है ना? वो सदा कल्याण ही करता है। इसलिए हमारा भी कल्याण ही होगा। घबराने की बात नहीं। इसलिए यह बात भी सीखने की है कि वो क्या करता है और क्या नहीं करता है। नाम, रूप, देश, काल, गुण और कर्त्तव्य। कर्त्तव्य में वो क्या करता है और क्या नहीं करता है। स्थापना, विनाश और पालना तो करता है सृष्टि का, लेकिन बच्चों के साथ क्या करता है, वह अनुभव करते जाओ। यह भी अनुभव करने की चीज़ है। इसको गॉड रियलाइज़ेशन (परमात्मनुभति) कहते हैं। आपके घनिष्ट मित्र आपको छोड़ जायेंगे, आपके बहुत पैसे भी काम नहीं आयेंगे, आपकी जवानी भी नहीं रहेगी, स्वास्थ्य जवाब दे देगा, कोई किसी का नहीं होगा। उस समय भगवान, शिवबाबा ही आपकी मदद करेगा। करेगा, करेगा, ज़रूर करेगा, निश्चित समझ लीजिये- करेगा। हो ही नहीं सकता, न करे। बुद्धि में यह बिठा दीजिये अच्छी तरह से, यह बात जीवन में कभी भूलने की नहीं है।

राजुला-गुज.। दीव सर्किट हाउस में भारत सरकार के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी से मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. अनु दीदी एवं ब्र.कु. सरोज बहन।

विजयवाडा-आंध्र प्रदेश। एन. चंद्रबाबू नायडू से उनके कक्ष में मुलाकात करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय व ब्र.कु. शिविका,माउण्ट आबू, विधायक ब्र.कु. अंजनेयुलु, ब्र.कु. सत्यनारायण,सिकंदराबाद, ब्र.कु. पद्मजा तथा अन्य।

शान्तिवन। 10 आदिवासी महिलाओं को घरेलू व्यवसाय शुरू कर आत्मनिर्भर बनाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ रेडियो मधुबन और स्फेरूल फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से महिला आजीविका पुनर्जीवन परियोजना 'स्वयं शक्ति' कार्यक्रम में उपस्थित रहे संस्था के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करूणा भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी, स्फेरूल फाउंडेशन के प्रोग्राम मैनेजर डॉ. शान्ति सागर कांबले, रेडियो मधुबन की प्रोडक्शन हेड ब्र.कु. कृष्णा, रेडियो मधुबन की स्थानीय स्वयंसेवी पवन कंवर तथा अन्य।

पुणे-धनकवडी(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी को इंग्लैंड ने ऑनर किलामी दीक्षांत समारोह में 'ग्लोबल बुक ऑफ एक्सीलेंस' से सम्मानित किया गया। धनकवडी सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में संतोष दीदी को अवॉर्ड प्रदान करते हुए ग्लोबल बुक ऑफ एक्सीलेंस की ब्रांड एम्बेसडर अभिनेत्री ईशा अग्रवाल और रयत शिक्षण संस्था, सतारा के नागार्जुन चंद्रकांत दळवी। साथ हैं मीरा सोसायटी उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. सुनंदा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुलभा दीदी तथा ग्लोबल बुक ऑफ एक्सीलेंस, इंग्लैंड के वाइस प्रेसिडेंट ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके।

सैन फर्नांडो-त्रिनिदाद। सेवाकेंद्र में ब्र.कु. डॉ. पायल के 50 वें जन्मदिन के उपलक्ष्य पर आभार और धन्यवाद समारोह में उपस्थित रहे महामहिम और डॉ. श्रीमती प्रदीप राजपुरोहित,त्रिनिदाद में भारत के उच्चायुक्त, श्रीमती ज़लेहर हसनाली,पूर्व प्रथम महिला, रेनॉल्ड कपूर,पूर्व स्थायी सचिव और लोक सेवा प्रमुख, डॉ. रॉय टिल्लुकडाहैरी,प्रमुख विशेषज्ञ चिकित्सक तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति।

मैसूर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज़ मैसूर नेतृत्व में विश्वविद्यालय के ओपन एअर थिएटर में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे डॉ. पुष्पा,जिला आयुष निदेशक, डॉ. लक्ष्मीनारायण शेणॉय,सरकारी आयुर्वेद कॉलेज व अस्पताल निदेशक, गेशिला जी,तिब्बती भिक्षु और शेनफेन चैरिटेबल ट्रस्ट निदेशक, ब्र.कु. वीणा दीदी,सिरसी, ब्र.कु. रूपा दीदी,बेंगलुरू, ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी,ब्रह्माकुमारीज़ मैसूर निदेशिका, ब्र.कु. रंगनाथ एवं ब्र.कु. रामचंद्र। कार्यक्रम में जिला आयुष विभाग, मैसूर योग एसोसिएशन, मैसूर योग महासंघ के सदस्य तथा विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेज के छात्र भी शामिल रहे।

राजगढ़-म.प्र.। गीता जयंती के अवसर पर जिला जेल परिसर में 'स्वर्णिम युग का आधार सत्य गीता सार' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पूर्व विधायक रघुनंदन शर्मा, प्रभारी जेल अधीक्षक राकेश मोहन उपाध्याय, प्रमुख मुख्य प्रहरी अमर सिंह सोलंकी, स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. सुमित्रा, समाजसेवी एवं रिटायर्ड इंजीनियर प्रताप सिंह सिसोदिया, सिंचाई विभाग के एसडीओ आर.सी. शर्मा, भूमि विकास बैंक के रिटायर्ड बैंक अरविंद सक्सेना एवं जेल शिक्षक लखन सिंह सोंधिया।

वडोदरा-गुज.। मांजलपुर सेवाकेंद्र के अंतर्गत ब्रह्माकुमारी कन्याओं का समर्पण, पवित्र तपस्वी युगलों का सम्मान समारोह, उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. राज दीदी,मंगलवाड़ी का 77वां जन्मदिवस त्रिवेणी कार्यक्रम में उपस्थित रहे यूनाइटेड वे में गरबा गाने वाले प्रसिद्ध गायक कलाकार अतुल पुरोहित,ऋतंभरा ग्रुप, डॉ. बिपिन पटेल, आर्किटेक्ट अजीत नायर, मणिनगर उपक्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. नेहा, मांजलपुर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. धीरज बहन।

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

आवश्यकता है स्वयं को मैनेज करने की...

तनावमुक्त बन चुनौति के वक्त सही निर्णय ले अपना फोकस क्लीयर रखें...

- गतांक से आगे...

पिछले अंक ओम-19 में आपने पढ़ा कि कम्पटीशन की दुनिया में जीतने के लिए क्या चाहिए? क्या चाहिए? सूझ चाहिए, समय सूचकता चाहिए। अमेरिकनों के पास बहुत अच्छी क्वालिटी के जूते होंगे लेकिन उसने सोचा कि इसको जंगल में क्या करेंगे? वो लाया ही नहीं। और जब वो लाया ही नहीं तो एक इंडियन ऑर्डनरी टैनिंग शूज़ पहन कर भी जीत जाता है। अब आगे पढ़ेंगे...

तो जीवन के अन्दर आपके पास क्या है ये महत्वता नहीं है, लेकिन सूझ कितनी है उसको यूज़ करने की! आपके पास सारे संसाधन होंगे लेकिन समय पर आपको सूझा ही नहीं। उसको यूज़ करते ही नहीं हैं तो आपके सामने कोई ऑर्डनरी तरीके से भी आगे निकल जाता है और आप सोचते रह जायेंगे। इससे अच्छा तो मेरे पास था लेकिन क्या फायदा वो तो आगे निकल गया। और बाकी के लोग तो पीछे रह गये। तो कम्पटीशन की दुनिया में जीतने के लिए समय सूचकता चाहिए। और समय पर उन संसाधनों का सही तरीके से प्रयोग करने की आवश्यकता है लेकिन आज तनाव की दुनिया में क्या हो रहा है, सूझता ही नहीं है, इतना टेंशन है आज हर इंसान को कि बाद में समझ आता है कि अरे ये भी कर सकते थे, ये भी कर सकते थे लेकिन अब तो समय निकल गया और फिर हाथ मलते रह जाते हैं। इसलिए सेल्फ को मैनेज करना बहुत ज़रूरी है क्योंकि दिन प्रतिदिन चुनौतियां बढ़ती ही जा रही हैं। और ये बढ़ती चुनौति में सक्सेसफुल भी होना है, सफल भी होना चाहते हैं तो इसीलिए कहा कि चुनौति के वक्त दो प्रकार के लोग होते हैं- एक है कि जिसके सामने चुनौति अवसर के द्वार खोलती है, सिम-सिम दरवाजा खुल जा। और एक के बाद एक आगे बढ़ने के मौके, अवसर उसको प्राप्त होते हैं, और दूसरे प्रकार के लोग हैं जिसके सामने चुनौति अवसर के द्वार बंद कर देती है और खूब पछाड़ती है, जो ज़िंदगी भर फिर अफसोस करने के सिवाय उसके पास कुछ नहीं होता है। तो चुनौति किसके लिए अवसर के द्वार खोलती है, और किसके लिए अवसर के द्वार बंद करती है।

बहुत सुन्दर मैंने कहीं पढ़ा कि चुनौति के वक्त जो सही निर्णय लेता है, राइट डिसीज़न एट द राइट टाइम। उसके लिए वो चुनौति अवसर के द्वार खोलती है। और एक के बाद एक द्वार खुलते जाते हैं और वो व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ता जाता है। और चुनौति के वक्त जो गलत निर्णय लेता है उसके लिए वो द्वार बंद हो जाते हैं। और समय खूब पछाड़ता है, फिर अफसोस करता है काश उस समय मैं फलाने की बात में नहीं आता, काश उस समय मैंने ये निर्णय लिया होता, काश उस वक्त मैं इस टेंशन से नहीं गुज़रता तो आज मैं भी कहाँ से कहाँ पहुंच जाता। काश! तो चुनौति के वक्त गलत निर्णय क्यों होता है? इसलिए कि चुनौति के वक्त जब व्यक्ति तनाव ग्रसित हो जाता है तो उसको कुछ सूझता नहीं है। फोकस क्लीयर नहीं है, धुंधला है। कई सारी बातें उसके सामने होती हैं कि ये करूं, या ये करूं, या ये करूं, और उस समय कई बार कई लोग दूसरों का सहारा लेने का प्रयत्न करते हैं कि आप क्या समझते हो मुझे क्या करना चाहिए? मुझे ये करना चाहिए या ये करना चाहिए? अब वो व्यक्ति कौन-सा तनाव मुक्त है, वो व्यक्ति का फोकस क्लीयर है जो सही निर्णय देगा और उसने अपनी कैपेसिटी अनुसार जो बात बताई हमने वैसा कर लिया फिर बाद में हम कहते हैं कि इसकी मत पर चलना ही नहीं था मुझे। मैं नहीं चलता तो सही निर्णय ले लेता, फिर पछताता है।

आपके पास क्या है या कितना है ये महत्व नहीं रखता। लेकिन आप कितनी सूझ-बूझ से उसका उपयोग करते हैं महत्व उसका है। लक्ष्य स्पष्ट हो और फोकस हो तो सफलता न मिले ये असंभव है। बस, आवश्यकता है अपनी बुद्धि को क्लीयर और क्लीन रखने की।

तो चुनौति के वक्त सही निर्णय हो उसके लिए अपने माइंड को, फोकस को क्लीयर रखना बहुत आवश्यक है। क्योंकि तभी इंसान सफल होते-होते बहुत आगे निकल जाता है। इसकी समय की पुकार है, इस चीज़ की समय की पुकार है क्योंकि हर कोई जीवन में आगे बढ़ना चाहता है, कुछ करना चाहता है, अपनी शक्ति को सही दिशा में लगाना चाहता है लेकिन उसके लिए उसके फोकस को क्लीयर रखना ज़रूरी है। तब कहा कि अगर कई बार एक के बाद एक असफलता प्राप्त होती जाती है तो व्यक्ति भीतर से टूटने लगता है, दिलशिकस्त हो जाता है, और दिलशिकस्त हो करके फिर कभी-कभी डिप्रेशन का शिकार बन जाता है। आवश्यकता है स्वयं को हम भीतर से सशक्त करें। क्योंकि तभी हम जीवन के अन्दर जिस मंज़िल को प्राप्त करना चाहते हैं उस मंज़िल की तरफ सहजता से आगे बढ़ सकते हैं।

इंदौर न्यू पलासिया-म.प्र.। ज्ञानशिखर में जैन मुनि प्रमाणसागर जी महाराज के शंका समाधान कार्यक्रम में जैन समाज द्वारा राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी को सम्मानित किया गया।

हैदराबाद-शांति सरोवर। सिटाडेल होटल में मोटिवेशनल स्पीकर जया किशोरी से मुलाकात कर ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. वासंता व डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके। मौके पर उपस्थित रहे ब्र.कु. माधवी, ब्र.कु. शक्ति,शांति सरोवर।

छोटा उदेपुर-गुज.। दिल्ली के इंटरनेशनल अवॉर्ड फर्म,यूएसए के द्वारा दुबई में आयोजित सम्मान समारोह में ब्र.कु. डॉ. मोनिका,छोटा उदेपुर,गुजरात को विभिन्न क्षेत्रों में किए गए समाज कल्याण के कार्यों के लिए 'इंटरनेशनल वुमेन्स लीडरशीप अवॉर्ड-2024' से सम्मानित किया गया।

राजनांदगांव-छ.ग.। भागवत कथावाचक आचार्य श्री. श्याम उपाध्याय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा। साथ हैं ब्र.कु. रम्भा।

रीवा-म.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर कृषि विज्ञान केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिज्ञा करते हुए रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक जोशी, एग्रीकल्चर कॉलेज की डीन एसके त्रिपाठी, कवि बृजनाथ पांडे, ब्र.कु. ममता तथा अन्य। कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. सुमंत,माउण्ट आबू ने वर्चुअल माध्यम से अपने विचार साझा किए।

मुलुंड-लोनावला(महा.)। विश्व योग दिवस पर पारसमणि राजयोग रिट्रीट सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे सनी जाधव,सरपंच व सचिन गरुड,उप सरपंच,मुंढवारे ग्राम पंचायत, महेश राठौड़,प्रबंधक,महावीर जैन सेवा संस्थान,मुंढवारे, राजयोगिनी ब्र.कु. गोदावरी दीदी, ब्र.कु. डॉ. सरला तथा ब्र.कु.बिंदीया।

भिलाई-छ.ग.। विंटर कार्निवल का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए पवन अग्रवाल,इस्पात सयंत्र के ई डी पर्सनल, भिलाई सेवाकेंद्रों की निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी एवं ब्र.कु. प्राची बहन।

वाशी-नवी मुंबई। वर्ल्ड मेडिटेशन डे पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. प्रीति, नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी के सीनियर ब्रांच मैनेजर अरुंधम गांगूली, योगाचार्य डॉ. उर्मिल तायल, थायरोकेअर टेक्नॉलॉजी लिमिटेड के असिस्टेंट मैनेजर अविनाश वडम, बैतूलाई लिमिटेड के सी ए धनराज नरवरे तथा अन्य।

ग्वालियर-मोहना(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में श्री श्री 108 रमनपुरी नागा महाराज को ईश्वरीय सौगात भेट करते हुए लश्कर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, ब्र.कु. प्रहलाद व स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति। कार्यक्रम में उपस्थित रहे परमानंद मिश्रा,समाजसेवी एवं अध्यक्ष जानकी सेना, कमल सिंह भदौरिया,समाजसेवी, बीजेपी मंडल अध्यक्ष सतेंद्र धाकड़, ममता भदौरिया,मंडल अध्यक्ष महिला मोर्चा, विधायक प्रतिनिधि, पार्षद नरेन्द्र मुन्ना चौबे, शिवसिंह गुर्जर,सरपंच बाग वाला गाँव,भवंरपुरा, मोनू उपाध्याय,सरपंच रेहट, मोहन तोमर,सरपंच खांदी तथा अन्य अतिथिगण।

नागठाणे-महा.। ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन को फूलों का गुलदस्ता भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. सुवर्णा, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. राहुल एवं ब्र.कु. उदय।

नई दिल्ली। बेल्लामोंड होटल में आयोजित अवॉर्ड समारोह में ओम शांति मीडिया द्वारा मूल्यनिष्ठ मीडिया को बढ़ावा देने के लिए ओमशान्ति मीडिया के संपादक राजयोगी डॉ. ब्र.कु. गंगाधर को 'ग्लोबल बिज़नेस अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता सोनू सूद व सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री डॉ. ईशा अग्रवाल। साथ हैं लाजपत नगर की सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. जया, डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके एवं ब्र.कु. विकास।

हमारे हर थॉट पर ही हमारा मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य निर्भर

बहुत बार मन में ये संकल्प आता है, मैंने इतना किया, मैंने इतना किया, मैंने इसके लिए इतना किया, मैंने परिवार के लिए इतना किया। मेरी तो कोई वैल्यू नहीं है, मुझे तो कोई कुछ नहीं मिल रहा है, सिर्फ मैं ही सबको देते जा रही हूँ। तो मैं अगर सबको देते गई तो मुझे कहाँ से मिलेगा! एनर्जी का इक्वेशन ये नहीं है कि मैंने दिया और मैंने आपसे लिया, नहीं। एनर्जी का इक्वेशन है- मैंने आपको दिया और देते समय वो मुझसे फ्लो होता हुआ वो आपके पास गया। हमें आज सिर्फ ये फाइनल करना है कि कैसे हमें इस पॉवर को इतना बढ़ाना है, इतना बढ़ाना है ताकि जीवन में कोई भी बात आ जाए छोटी-छोटी नहीं, बड़ी से बड़ी बात आ जाए, हमारे पास उस बड़ी बात को फेस करने की भी पॉवर है।

थॉट्स मन में क्रिएट होते हैं। इसी लिए कई बार ज़्यादा थॉट्स क्रियेट होते हैं तो हम कहते हैं कि सर भारी हो रहा है, और दूसरी चीज़ ये अनुभव किया है कि टू मच थॉट्स चल रहे हैं, कि हम बहुत ज़्यादा सोच रहे हैं तो वो थॉट्स मन में चलती है इसलिए भारीपन मन में लगता है। टू मच थिंकिंग मन में लगता है। अब सिर्फ इसको चेक करना, खुद फील करना, हरेक थॉट जो हम यहां क्रियेट करते हैं, उसका प्रभाव कहां-कहां पड़ता है।

सबसे पहले मेरी हर थॉट्स से मेरी फीलिंग्स बनती है। मेरे हर संकल्प से मेरी भावनायें बनती हैं। तो कभी-कभी हम कहते हैं कि आज मुझे अच्छा नहीं फील हो रहा है, आज मुझे लो फील हो रहा है, आज मुझे बहुत अच्छा फील हो रहा है। तो ज़्यादातर हम अपने आपको फीलिंग के लेवल पर चेक कर सकते

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हैं कि हम कैसा फील करते हैं। हम एक-दूसरे को पूछते भी हैं कि आज आप कैसा फील कर रहे हैं? तो हम फीलिंग की भाषा समझते हैं कि हम फील कैसा कर रहे हैं? लेकिन जो फीलिंग है वो सेकण्ड बात है। वो फीलिंग क्रिएट होती है मेरी हर एक थॉट से। हमारी हर थॉट से हमारी मेंटल हेल्थ(मानसिक स्वास्थ्य) बनती है, तो हमें हर संकल्प का ध्यान रखना कितना ज़रूरी है!

दूसरा, अब आप चेक करना कि मन में थॉट क्रियेट की तो वो थॉट का नेक्स्ट इफेक्ट कहाँ जायेगा? पहले तो फीलिंग हुई, उसके बाद हर थॉट का इफेक्ट कहाँ जाएगा? नेक्स्ट हमारे शरीर पर- बीमारियां, मैजोरिटी बीमारियों को लेकर डॉक्टर के पास जाओ तो डॉक्टर कहते हैं कि लाइफ स्टाइल डिज़ीज़ है।

अपनी लाइफ स्टाइल को ठीक करिए, तो हम लाइफ स्टाइल में खाना-पीना, एक्सरसाइज़, नींद को ठीक करते हैं। फिर भी बहुत बातें हो जाती हैं। फिर डॉक्टर के पास जाते हैं- डॉक्टर साहब खाना भी ठीक है, सब कुछ ठीक है तो डॉक्टर कहते स्ट्रेस लाइफ स्टाइल है। तो लाइफ स्टाइल मतलब आत्मा जो मस्तिष्क में बैठी है उसको लाइफ कहते हैं। जब वो आत्मा लाइफ निकल जाती है तो ये डेड बॉडी है। तो जब डॉक्टर हमें कहे लाइफ स्टाइल को ठीक करिए तो लाइफ स्टाइल मतलब सोचने का तरीका, बात करने का तरीका, व्यवहार करने का तरीका और काम करने का तरीका।

तो मेरे हर संकल्प का प्रभाव मेरे शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। उसके बाद नेक्स्ट फीलिंग्स हेल्थ, फिर नेक्स्ट हर वायब्रेशन हमने जिसके बारे में सोचा चाहे वो उसी कमरे में बैठा है, चाहे वो दूसरे देश में बैठे हैं, हम फोन उठाकर मैसेज टाइप करें फिर वो मैसेज वहां भेजे, उसमें तो कुछ सेकण्ड, कुछ एक मिनट लग जाता है। लेकिन जैसे ही आपने थॉट क्रियेट किया तो वो दूसरों तक तुरंत पहुंच जाता है।

- क्रमशः

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000
Website: www.omshantimedia.org

बिलासपुर-निराला नगर(छ.ग.)। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. राजेंद्र फड़के के सेवाकेन्द्र आगमन पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वाति। साथ हैं ब्र.कु. संतोष, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ प्रदेश संयोजिका विभा राव, पीएसी रेलवे बोर्ड तथा प्रदेश महामंत्री भाजपा महिला मोर्चा विभा अवस्थी, लायन्स क्लब एम्बेसडर डॉ. कमल छाबड़ा, जिला प्रभारी शिखा तिवारी, सीमा पांडेय, राजेश मिश्रा तथा स्मृति जैन।

कामठी-महा.। कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के शाश्वत यौगिक खेती विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् महाराष्ट्र राज्य के कृषि विभाग के डायरेक्टर,इनपुट एंड क्वालिटी कंट्रोल डॉ. सुनील बोरकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता दीदी। साथ हैं रूची ओस्टर कंपनी गोंदिया के मैनेजिंग डायरेक्टर भालचंद्र ठाकुर और अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

बेंगलुरु-येलहंका(कर्नाटक)। शेषाद्रिपुरम फर्स्ट ग्रेड कॉलेज ऑडिटोरियम में 'स्पिरिचुअल विज़डम फॉर लाइफ एम्पॉवरमेंट' विषय पर आयोजित एजुकेटर कॉन्फ्रेंस का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में मारुति नगर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. कला, मल्लेशपाल्या सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. कमल बहन, येलहंका सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विजयलक्ष्मी, संजय नगर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सोनी बहन, नेशनल रिज़नल को-ऑर्डिनेटर,एजुकेशन विंग ब्र.कु. सुमन, पेनुकोंडा आंध्रप्रदेश सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. हेमलता, रीवा यूनिवर्सिटी प्रो. वाइस चांसलर,बेंगलुरु डॉ. शुभा ए., हाल बेंगलुरु सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सूर्या, उपक्षेत्रीय निदेशिका कुमारा पार्क ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सरोजा, टीडीयू यूनिवर्सिटी वाइस चांसलर डॉ. दर्शन शंकर, कृष्णदेवराय एजुकेशनल ट्रस्ट के प्रेसिडेंट वि. श्रीनिवास राजू, टीसीएस फाउंडेशन इम्पैक्ट इनोवेशन हेड ब्र.कु. भानुप्रसाद, टेक्नोलोजिस्ट, एजुकेशनिस्ट, सोशल एक्टिविस्ट एंड ह्यूमनिस्ट, डॉ. वूडे पी. कृष्णा तथा रिज़नल को-ऑर्डिनेटर एजुकेशन विंग ब्र.कु. सुरेंद्रन।

अलसी से न आलसी बन... स्वास्थ्य की ओर बढ़ा अपने कदम

अलसी एक तरह का बीज है जिसे हिंदी में तीसी और अंग्रेज़ी में फ्लैक्स सीड के नाम से जाना जाता है। यह शरीर के लिए बहुत ही फायदेमंद है। शरीर की कमज़ोरियों को दूर करके यह शरीर को मजबूत बनाता है और साथ यह कई तरह की बीमारियों से दूर भी रखता है। अलसी का इस्तेमाल कई तरह से किया जाता है। आज बाज़ार में ये सप्लीमेंट में भी उपलब्ध है। अपनी ढेरों खूबियों की वजह से इसे आयुर्वेद में जड़ी-बूटी नाम से जाना जाता है। लेकिन जहाँ इसके ढेरों फायदे हैं वहाँ कुछ नुकसान भी हैं, चलिए जानते हैं...

ज़ुकाम में दे राहत...

ज़ुकाम से परेशान हैं तो अलसी का इस्तेमाल कर सकते हैं। महीन पिसी अलसी को साफ कर धीमी आंच से तवे पर भून लें। जब यह अच्छी तरह भून जाए और गंध आने लगे तब पीस लें। इसमें बराबर मात्रा में मिश्री मिला लें। अलसी खाने का तरीका यह है कि आप इसे 5 ग्राम की मात्रा में गर्म पानी के साथ सुबह और शाम सेवन करें। इससे ज़ुकाम में लाभ होता है।

वात-कफ दोष में अलसी के फायदे

अलसी के औषधीय गुण का फायदा वात-कफ विकार में भी ला सकते हैं। 50 ग्राम भूनी अलसी के चूर्ण में बराबर-बराबर मात्रा में मिश्री और एक चौथाई भाग मरिच(काली मिर्च) मिला लें। इसे 3-5 ग्राम की मात्रा में सुबह मधु के साथ सेवन करने से वात-कफ दोष विकार ठीक होते हैं।

थायराइड में लाभदायक...

आप थायराइड का उपचार करने के लिए भी अलसी का प्रयोग कर सकते हैं। अलसी के लाभ का फायदा उठाने के लिए बराबर-बराबर मात्रा में अलसी के बीज, शमी, सरसों, सहजन के बीज, जपा के फूल तथा मूली के बीज को छाछ से पीसकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को गले की गांठों आदि पर लेप करने से थायराइड में लाभ होता है।

मूत्र विकार(पेशाब संबंधित रोग) में लाभ...

पेशाब संबंधित रोगों को ठीक करने लिए भी अलसी का इस्तेमाल करना बहुत अच्छा फायदा देता है। इसके लिए 10-12 ग्राम अलसी के बीज के चूर्ण में 5-6 ग्राम मिश्री मिला लें। इसे 3-3 घंटे पर सेवन करने से पेशाब संबंधित बीमारी ठीक होती है।

स्वास्थ्य

बवासीर में अलसी के तेल के सेवन से फायदा

बवासीर के लिए 5-7 मिली अलसी के तेल का सेवन करें। इससे कब्ज ठीक होता है और बवासीर में लाभ होता है।

जोड़ों के दर्द में राहत...

जोड़ों के दर्द या गठिया में भी अलसी जड़ी-बूटी बहुत काम करती है। अलसी तेल या अलसी के बीजों को इसबगोल के साथ पीसकर लगाने से जोड़ों के दर्द में लाभ होता है।

अलसी दिल को तंदुरुस्त रखती है...

दिल शरीर का सबसे खास हिस्सा है। दिल में परेशानी होने का मतलब पूरे शरीर में परेशानी होना है। इसलिए अगर आप स्वस्थ रहना चाहते हैं तो सबसे पहले अपने दिल को स्वस्थ रखने की कोशिश करें। खराब जीवनशैली और अनहेल्दी खान-पान से दिल से संबंधित बीमारियां होने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए हेल्दी खाना, फल-फ्रूट व सब्जी खाएं और बाहर के खाने फास्ट फूड्स, कोल्ड ड्रिंक और मसालेदार चीजों से परहेज करें। अपने दिल को स्वस्थ और इससे संबंधित बीमारियों को दूर रखने के लिए आप अलसी का सेवन कर सकते हैं। इसमें बहुत ऐसे तत्वों का भंडार है जो दिल को हेल्दी रखने में मदद करते हैं।

इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाती...

शरीर का इम्यून सिस्टम मजबूत होना बहुत ज़रूरी है क्योंकि यही इस बात का फैसला करता है कि आप कितना स्वस्थ और बीमारियों से दूर रहेंगे। इम्यून सिस्टम खराब होने से शरीर में ढेरों बीमारियां और परेशानियां होती हैं। इसलिए इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए बहुत सारे उपाय मौजूद हैं लेकिन क्या आपको पता है कि आप अपना इम्यून सिस्टम अलसी की मदद से मजबूत बना सकते हैं? इसमें फाइबर, प्रोटीन और कई तरह के तत्व पाए जाते हैं जो इम्यून सिस्टम के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। अगर आपका इम्यून सिस्टम कमज़ोर है और आप हमेशा बीमार पड़ते रहते हैं तो आप अलसी को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं। यह आपको बीमारियों से दूर रखने में सहायक होता है।

ब्लड प्रेशर को कम करे...

अलसी खाने के फायदे में ब्लड प्रेशर को कम करना भी शामिल है। स्वस्थ रहने के लिए तनाव से मुक्त होना बहुत ज़रूरी है। तनाव की वजह से सैंकड़ों बीमारियां पैदा होती हैं। हाई ब्लड प्रेशर भी उन्हीं में से एक है। आप जैसे ही तनाव में होते हैं आपका ब्लड प्रेशर कम हो जाता है, जिसकी वजह से आपको दिल का दौरा, ब्रेन हेमरेज और दूसरी कितनी भी बीमारियां हो सकती हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि आप तनाव से दूर रहें। अलसी आपके तनाव को दूर करने में मदद कर सकता है क्योंकि इसमें फाइबर और दूसरे ऐसे गुण पाए जाते हैं जो ब्लड प्रेशर को कंट्रोल रखने का काम करते हैं।

अलसी के नुकसान...

दुनिया में मौजूद जिन चीज़ों को भी हम सेवन करते हैं उनके कुछ फायदे तो कुछ नुकसान होते हैं। अलसी के साथ भी यही थ्योरी लागू होती है।

- अलसी का ज़रूरत से ज़्यादा सेवन करने से आपकी आंतों को नुकसान हो सकता है। अगर रोज़ाना पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं पीते हैं तो फिर आपको खासकर अलसी के सेवन से बचना चाहिए। क्योंकि ज़्यादा पानी न पीने की स्थिति में इसका सेवन आंतों में ब्लॉकेज की संभावना को बढ़ा देता है।
- जिन लोगों को अलसी के सेवन से एलर्जी है उन्हें इससे बचना चाहिए। इसका सेवन करने पर उन्हें लो ब्लड प्रेशर, घबराहट, चक्कर आना और वोमिटिंग जैसी समस्या हो सकती है।
- अगर आप खून को पतला करने वाली दवाओं का सेवन कर रहे हैं तो आपको अलसी का सेवन नहीं करना चाहिए।
- हार्मोनल असंतुलन या एंडोमेट्रिओसिस की स्थिति में अलसी के सेवन से बचना चाहिए।

बार्शी-महा.। विधायक एवं महाराष्ट्र विधानसभा के तालिकाध्यक्ष दिलीपराव सोपल को फूलों का गुलदस्ता भेंट कर जन्मदिन की मुबारक देते हुए स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. संगीता दीदी। साथ हैं निशा बहन, अनीता बहन, मोहन भाई, विला भाई, सुजीव भाई, नागनाथ भाई, अशोक भाई तथा सुजाता बहन।

शेगांव-महा.। म्यूजियम का अवलोकन करने के पश्चात् न्यायाधीश कु. प्रीति खंडारे,बुलढाणा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शारदा दीदी।

पन्ना-म.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस के उपलक्ष्य में पवई सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में सभी किसान भाइयों को सम्मानित करने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. सीता।

धड़गांव-महा.। वर्ल्ड मेडिटेशन डे पर सेवाकेन्द्र पर तीन दिवसीय राजयोग मेडिटेशन कोर्स का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता।

छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। दर्शना वृद्ध आश्रम में वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयोजित कार्यक्रम में सभी बुजुर्गों को सम्बोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. कल्पना। साथ हैं वृद्ध आश्रम संचालिका प्रभा विदु। कार्यक्रम में सभी को मफलर और मौजे भी वितरित किए गए।

बैतूल-म.प्र.। सलैया में आयोजित सात दिवसीय गीता ज्ञान यज्ञ में उपस्थित रहे ब्र.कु. नेहा,सिवनी, ब्र.कु. मंजू,बैतूल, ब्र.कु. सुनीता,सारनी तथा अन्य भाई-बहनें।

जहाँ डिमांड है वहाँ डिविनिटी नहीं

परमात्मा अपने हरेक बच्चे को कुछ न कुछ देना चाहता है। और दे भी क्यों नहीं? क्योंकि जब वो देखता है कि उसका हरेक बच्चा लायक है तो उसके अन्दर से ही आता है कि इसको मिलना चाहिए। लेकिन जो ऊंचे से ऊंचा है इस दुनिया में सबसे हाईएस्ट अथॉरिटी है उससे हमें कुछ मांगने की आवश्यकता है या नहीं है? क्योंकि जहाँ पर ये वाला शब्द आता है वहीं से हमारी दिव्यता, हमारी डिविनिटी नष्ट होनी शुरू होती है। कहा जाता है कि ईश्वर को लोग या भगवान को लोग थैंक्स कब करते हैं? जब उनको कुछ स्थूल में अच्छी प्राप्ति होती है, या कुछ मिल जाता है। तो खुशी निश्चित रूप से होनी ही चाहिए और होती भी है। लेकिन उस खुशी को व्यक्त करने का आधार स्थूलता या प्राप्ति को मानते हैं।

परमात्मा हमेशा हमको कहते हैं कि तुम देवता बन जाओ, तुम्हारे पास सारी चीज़ें अपने आप आ जायेंगी। अवेलेबल(उपलब्ध) हो जायेंगी। लेकिन अगर सारी चीज़ें हमारे पास नहीं पहुंच रही हैं, सन्तुष्टता का लेवल लॉ है तो ज़रूर कुछ न कुछ कमी है, जिसको हमको ढूंढना है। कहा जाता है कि ऊपर से जो कोई चीज़ छोड़ी जाती है तो बहुत तेज़ी से नीचे आती है। इसका मतलब हुआ कि परमात्मा सबसे ऊंचे से ऊंचा है। जब उससे हम शक्ति और गुण लेते हैं, उससे ताकत लेते हैं तो शक्ति, गुण लेने के बाद हमारी दिव्यता, हमारी अलौकिकता, हमारा सबकुछ बहुत तेज़ी से बढ़ना चाहिए। लेकिन नहीं बढ़ रहा है क्योंकि हमारे मन में जो हमारी कमियां हैं, कमी का मतलब रहने की, खाने की, पीने की, कोई भी ऐसी चीज़ जो स्थूल में हमको नहीं मिली है, उसके लिए भी हम कई बार परमात्मा से जुड़ते हैं। भले ऊपर-ऊपर से हम कहते हैं कि हमें इन सारी चीज़ों से क्या लेना? हमको तो भगवान मिल गया। लेकिन परमात्मा के मिलने के बाद भी अगर डिविनिटी में कमी आ रही है तो ज़रूर कोई न कोई डिमांड है। अब उस डिमांड की सूक्ष्मता हमको वो वाला अनुभव नहीं करने दे रही है जो हमको करना चाहिए। और जब वो अनुभव नहीं होता तो धीरे-धीरे हम सभी उस स्थूलता में अपने आप को ले जाते हैं।

फिर धीरे-धीरे एक समय ऐसा आता है कि देखो हमको परमात्मा ने इतना कुछ दिया, ये उसकी कृपा ही तो है। निश्चित रूप से कृपा है। लेकिन उस कृपा में एक चीज़ हम सबके लिए जो सोचने वाली चीज़ है, वो ये है कि अगर वो कृपा हुई भी है तो हमारे खुद के पुरूषार्थ से, खुद के भाग्य से। परमात्मा सिर्फ और सिर्फ हमको शक्तियां प्रदान करता है। शक्ति देता है ताकि मैं उस चीज़ के लिए सोच सकूं और कल्याणकारी सोच सकूं। लेकिन इतने समय तक अभ्यास करने के बावजूद भी अगर हमको थोड़ी-थोड़ी भी, हम सबके अन्दर जैसा परमात्मा चाहते हैं कि देवताओं की तरह चाल हो, भाव हो, व्यवहार हो, जो मोहजीत हो, इस दुनिया से कोई लगाव नहीं हो। सबकुछ है वो फिर भी बिल्कुल डिटैच्ड हो। तो ये सारे भाव क्यों नहीं पैदा होते क्योंकि हम सभी अभी भी अन्दर से किसी न किसी डिमांड के साथ जुड़ते हैं। इसीलिए जिस दिन अन्दर से हमारी एक-एक डिमांड खत्म हो जायेगी, हमारी डिविनिटी उभर कर आयेगी। चाहे वो सूक्ष्म से हो, चाहे वो स्थूल से हो। दोनों में हमारी ऊर्जा नष्ट हो रही है। ये हम सबको बैठकर मनन-चिंतन करना है।

जिस चीज़ में हमारी ऊर्जा ज़्यादा नष्ट होती जा रही है, आप सोचो वो इस दुनिया में सबको पता है कि ये चीज़ें नश्वर हैं, आज नहीं तो कल चली जायेंगी। लेकिन जो हमको पाँच हज़ार साल तक चलायेगा उसके बारे में परमात्मा हमको रोज़ कहते हैं कि तुमको सिर्फ संकल्प करके अपने आपको इस दुनिया में मेहमान समझकर जीना है। लेकिन आप सोचो कि क्या वो मेहमान समझने का भाव गहराई से उतरा है? अगर उतर गया तो डिविनिटी आ जायेगी। लेकिन नहीं उतर रहा है तो हम डिविनिटी से बहुत दूर होते जा रहे हैं। इसलिए डिमांड को थोड़ा-सा, जैसे दुनिया में कहा गया है ना कि जितना डिमांड होती-होती सप्लाई होती है, लेकिन यहाँ उल्टा है जितना डिमांड है उतना हम रिप्लाई करते हैं।

तो जितना डिमांड बढ़ती गई उतनी डिविनिटी घटती गई। इसलिए इस भाव को लेकर ही हमें पुरूषार्थ पर ज़ोर देना चाहिए। ताकि धीरे-धीरे हम अपने अन्दर के सूक्ष्म और स्थूल दोनों डिमांड्स को कम करें। और अपनी डिविनिटी को बढ़ा सकें। ताकि जिसको मिलें, जिससे बात करें उनको लगे कि जैसे ये दुनिया से बिल्कुल डिटैच्ड हैं, अटैच्ड नहीं हैं। अपनी ऊर्जा को इन छोटी-छोटी चीज़ों में नष्ट करने से हमारी दिव्यता कहीं खोती जा रही है। सोचनीय विषय है, सोचेंगे तो ज़रूर कुछ न कुछ उत्तर मिलेगा और हम सभी पुरूषार्थ को आगे लेकर चल पायेंगे।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। दिव्य दर्शन भवन में विश्व ध्यान दिवस पर 'आंतरिक शांति, वैश्विक सद्भाव' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पं. डॉ. शिवशक्तिलाल शर्मा,आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं महाविद्यालय, आयुष ग्राम अध्यक्ष डॉ. अभिजीत देशमुख, प्राचार्य डॉ. दिलीप नलगे, पूर्व प्राचार्य राजेश शर्मा, आरोग्य भारती के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मिहिर कुमार, स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सविता व आयुष ग्राम के स्टाफ के सदस्य।

घाटकोपर-मुंबई। विश्व ध्यान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी, ब्र.कु. विष्णुप्रिया बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

खुशखबरी

आ गई शिव संदेश और राजयोग कॉमेन्ट्री की नई कुंजी...

हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको परमात्मा के बारे में बताया जाये,तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक ज़ेबी किताब या पॉकेट बुक डिज़ाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।

ओमशान्ति मीडिया,ब्रह्माकुमारीज़,
आनंद भवन,शांतिवन,आबू रोड(राज.-307510)
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088
ई.मेल - omshantimedia@bkivv.org

नीमच-म.प्र.। विश्व ध्यान दिवस पर सीआईएसएफ यूनिट में आयोजित तनाव मुक्ति शिविर के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्माकुमारीज़ सबज़ोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी, ब्र.कु. श्रुति बहन, यूनिट के प्रमुख असिस्टेंट कमाण्डेंट डी. एल. मीणा, इंस्पेक्टर श्रीमती पवन तंवर तथा अन्य जवान।

नवापारा-राजिम(छ.ग.)। विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर 'आंतरिक शांति, वैश्विक सद्भाव' विषय पर शहर के राधा कृष्ण मंदिर के प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. राजेंद्र, छत्तीसगढ़ शिक्षक संघ के प्रांतीय प्रवक्ता रामनारायण जी, गवर्नमेंट स्कूल के प्रिंसिपल प्रफुल्ल दुबे, धार्मिक प्रभाग के ज़ोनल को ऑर्डिनेटर ब्र.कु. नारायण, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. भारती,कटनी।

परमात्म ऊर्जा

भक्ति में भी पुकारते हैं ना - एक बार हाथ पकड़ लो। तो बाप हाथ पकड़ते हैं, हाथ में हाथ देकर चलाना चाहते हैं फिर भी हाथ छोड़ देते हैं तो भटकना नहीं होगा तो क्या होगा? तो अब अपने आपको भटकाने के निमित्त भी स्वयं ही बनते हो। जैसे कोई भी योद्धा युद्ध के मैदान पर जाने से पहले ही अपने शस्त्र को, अपनी सामग्री को साथ में रख कर फिर मैदान में जाते हैं। ऐसे ही इस कर्मक्षेत्र रूपी मैदान पर कोई भी कर्म करने अथवा योद्धे बन युद्ध करने के लिए आते हो, तो कर्म करने से पहले अपने शस्त्र अर्थात् यह अष्ट शक्तियों की सामग्री साथ रख कर फिर कर्म करते हो? व जिस समय दुश्मन आता है उस समय सामग्री याद आती है? तो फिर क्या होगा? हार हो जाएगी।

सदा अपने को कर्मक्षेत्र पर कर्म करने वाले योद्धे अर्थात् महारथी समझो। जो युद्ध के मैदान पर सामना करने वाले होते हैं वह कभी भी शस्त्र को नहीं छोड़ते हैं। ऐसे ही सोते समय भी अपनी अष्ट शक्तियों को विस्मृति में नहीं लाना है अर्थात् अपने शस्त्र को साथ में रखना है। ऐसे नहीं- जब कोई माया का वार होता है उस समय बैठ सोचो कि क्या युक्ति अपनाऊं? सोच करते-करते ही समय बीत जाएगा। इसलिए सदैव एवररेडी रहना चाहिए। सदा अलर्ट और एवररेडी रहना चाहिए। सदा अलर्ट और एवररेडी अगर नहीं है तो कहीं ना कहीं माया धोखा खिलाती है और धोखे का रिज़ल्ट क्या होता? अपने आपको देख कर ही दुःख की लहर उत्पन्न हो जाती है। अपनी कमी ही कमी को लाती है। अगर अपनी कमी नहीं है तो कब भी कोई भी कमी नहीं आ सकती। बेगमपुर के बादशाह कहते थे ना। यह इस समय की स्टेज है जबकि गम की दुनिया सामने है। गम और बे-गम की अभी नॉलेज है। इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते, इसलिए बेगमपुर का बादशाह कहा जाता है। भले बेगर हो लेकिन बेगर होते भी बेगमपुर के बादशाह हो। तो सदा इस नशे में रहते हो कि हम बेगमपुर के बादशाह हैं? बादशाह अथवा राजे लोगों में ऑटोमेटिकली शक्ति रहती है राज्य चलाने की। लेकिन उस ऑटोमेटिक शक्ति को अगर सही रीति काम में नहीं लगाते हैं, कहीं ना कहीं उल्टे कार्य में फंस जाते हैं तो राजाई की शक्ति खो लेते हैं और राज्य पद गंवा देते हैं। ऐसे ही यहाँ भी तुम हो बेगमपुर के बादशाह और सर्व शक्तियों की प्राप्ति है। लेकिन अगर कोई न कोई संगदोष व कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत हो अपनी शक्ति खो लेते हो तो जो बेगमपुर का नशा व खुशी प्राप्त है वह स्वतः ही खो जाती है। जैसे वह बादशाह भी कंगाल बन जाते हैं, वैसे ही यहाँ भी माया के अधीन होने के कारण मोहताज, कंगाल बन जाते हैं।

तब तो कहते हैं - क्या करें, कैसे होगा, कब होगा? यह सभी है कंगालपन, मोहताजपन की निशानी। कहां न कहां कोई कर्मेन्द्रियों के वश हो अपनी शक्तियों को खो लेते हैं। समझा?

नरसिंहपुर-म.प्र.। विश्व ध्यान दिवस पर स्थानीय जिला चिकित्सालय के ध्यान योग केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब्र.कु. वंदना, सिविल सर्जन डॉ. जी एस चौरसिया, डॉ. राहुल नेमा, डॉ. शुभलक्ष्मी सिंघई, प्रोफेसर डॉ. धीरज झा तथा अन्य डॉक्टर्स, स्टाफ नर्स आदि।

कथा सरिता

एक सेठ जोकि काफी ज़्यादा कंजूस था। सालों से वह एक ही पजामा पहन रहा था और वह नया पजामा नहीं लेता था। उसे लगता था कि इससे पैसा खर्च होगा। घर वालों के बहुत प्रयास करने के बाद कंजूस सेठ ने एक पजामा खरीद लिया।

जब पजामा सिलकर तैयार हुआ और जब सेठ अपनी दुकान पर जा रहा था तो उसने नहा कर वह पजामा पहनने का निर्णय लिया। सेठ ने उस पजामे को पहना तब उसे पता चला कि वह पजामा पांच अंगुली बड़ा है।

उसने उस पजामे को उतार दिया और सेठानी के पास गया कि इस पजामे को पांच अंगुली छोटा कर दो ताकि मैं इसे पहन सकूं परंतु सेठानी अपने कार्य में बिजी थी, सेठानी ने कहा कि इसे रख दो मैं बाद में कर दूंगी।

सेठ ने कहा ठीक है इसे कर देना परंतु सेठ को लगा कि शायद सेठानी भूल न जाए इसलिए वह अपनी पुत्रवधु के पास गया और उससे कहा कि पुत्री इस पजामे को पांच अंगुली छोटा कर देना यह बड़ा है

कार्य कराने से पहले सुनिश्चित करें

और मैं इसे पहन नहीं पा रहा हूँ, पुत्रवधु ने कहा ठीक है पिताजी।

मैं अनाज को साफ करने के बाद आपके पजामे को ठीक कर दूंगी परंतु सेठ को लगा कि पुत्रवधु अपने कार्य में कुछ ज़्यादा ही व्यस्त है इसलिए वह अपनी बेटी के पास गया और उसे कहा कि बेटी मेरा पजामा पांच अंगुली बड़ा है इसे तुम पांच अंगुली छोटा कर दो। बेटी पढ़ाई में व्यस्त थी इसलिए उसने कहा पिता जी आप इसे रख दीजिए मैं इसे ठीक कर दूंगी।

सेठ ने पुराना पजामा पहना और दुकान पर चला गया कुछ समय बाद सेठानी को याद आया कि सेठ जी ने बोला था पजामे को पांच अंगुली छोटा करना है।

सेठानी ने पजामे को पांच अंगुली छोटा कर दिया और उसे टांग दिया फिर बहू को याद आया कि ससुर जी पजामे को छोटा करने को बोलकर गए हैं इसलिए पुत्रवधु ने भी पजामे को पांच अंगुली छोटा कर दिया।

थोड़ी देर बाद बेटी भी पढ़ाई से फ्री हुई तो उसे भी याद आया कि पिताजी का पजामा पांच अंगुली छोटा करना है उसने भी पजामे को पांच अंगुली छोटा कर दिया।

जब सेठ रात को आया और जब उसने पजामे को देखा तब उसे समझ में आया कि वह पजामा पहनने के लायक नहीं बचा है क्योंकि उसने तीनों से एक ही समय पर वह कार्य करने को कह दिया इसलिए वह कार्य बिगड़ गया। जिसमें उसी की ही गलती थी। इसलिए वह किसी को कुछ कह भी नहीं सका।

सीख: हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने कार्य को किसी को देने से पहले सुनिश्चित करना चाहिए कि वह कार्य को कौन करेगा यदि एक ही समय पर एक कार्य को कई लोग करेंगे तो वह कार्य अत्यधिक बिगड़ सकता है।

एक गांव में बहुत अमीर व्यक्ति रहा करता था। जिसका नाम किशोर था और उसकी पत्नी का सरिता था। दोनों की कोई संतान नहीं थी। उनकी शादी को काफी समय हो चुका था वह दोनों काफी ज़्यादा अमीर थे। इसलिए अपने घर की देखभाल के लिए दो नौकर रख रखे थे। जिनका नाम बहादुर और शमशेर था।

उसी गांव के बाहर दो चोर थे और उनसे पूरा गांव परेशान था क्योंकि वह लोगों की अत्यधिक सावधानी के बावजूद भी चोरी कर लेते थे। उन दोनों चोरों ने विचार बनाया गांव के धनी व्यक्ति

मुश्किल वक्त में कभी भी हार न मानें...

किशोर के घर चोरी करने का।

वह रात्रि होते ही किशोर के घर में घुस गए। वह घर में कीमती सामान ढूंढने लगे परंतु गलती से एक चोर के हाथ से कुछ गिर गया और शोर होने के कारण सरिता जग गई और आवाज़ होने के कारण समझ गई कि कमरे के बाहर चोर हैं।

परंतु यदि वह कमरे से बाहर गई तो उन दोनों पति-पत्नी की जान को खतरा है। सरिता जानती थी कि यदि वह अपने दोनों नौकरों को किसी प्रकार उठा दे तो वह इन चोरों को आसानी से पकड़ लेंगे।

परंतु मुश्किल थी कि उन दोनों नौकरों को किसी प्रकार उठाया जाए वह पास के कमरे में ही सो रहे थे, जहाँ तक आवाज़ पहुंचना कोई मुश्किल कार्य नहीं था।

परंतु यदि वह बिना किसी कारण के उन दोनों को आवाज़ लगाती है तो चोर समझ जाएंगे कि वह जान चुकी है कि घर में चोरी हो रही है इससे उन दोनों की जान को खतरा भी हो सकता है।

इसलिए सरिता ने ऐसा नहीं किया। उसने अपने पति को उठाया और कहा कि हमारे घर में चोर हैं हमें बहादुर और शमशेर को उठाना होगा। तो पति को समझ में नहीं आया कि यह कैसे होगा।

चोर कमरे के बाहर तक पहुंच चुके थे जिससे दोनों की जान को भी खतरा था। पत्नी ने कहा कि मैं जैसा कहती हूँ वैसा ही करो। पत्नी ने चिल्लाते हुए कहा कि सुनो जी आपको तो पता ही है कि मैं माँ बनने वाली हूँ।

अगर हमारा बेटा हुआ तो आप उसका क्या नाम रखेंगे? पति ने चिल्लाते हुए कहा कि मैं उसका नाम 'बहादुर' रखूंगा, फिर पत्नी ने ज़ोर आवाज़ से कहा कि आपका अगर दूसरा बेटा हुआ तो आप उसका क्या नाम रखेंगे?

पति ने चिल्लाते हुए कहा कि 'शमशेर' नाम रखूंगा फिर पत्नी ने कहा कि अगर तीसरा बेटा हुआ तो आप उसका क्या नाम रखेंगे? पति ने कहा कि मैं उसका नाम चोर रखूंगा।

यह सुन दोनों चोर जोकि कमरे के बाहर थे बहुत खुश हुए फिर सरिता ने कहा कि आपकी आवाज़ में तो दम ही नहीं है ज़ोर से बताओ कि आप अपने तीनों बेटों का क्या नाम रखोगे?

किशोर ने ज़ोरों से चिल्लाते हुए बताया कि 'बहादुर, शमशेर, चोर' सरिता बोली तुम्हारी आवाज़ में तो दम ही नहीं है मुझे ज़ोरों से सुनना है ताकि पता चले कि तुम कितने खुश हो।

पति ने ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा 'बहादुर, शमशेर, चोर' 'बहादुर, शमशेर, चोर' यह सुन बहादुर और शमशेर उठे और मालिक के कमरे की तरफ भागे उन्होंने बाहर चोरों को देखा और उन्हें पकड़ लिया।

सीख : इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है कि मुश्किल वक्त में कभी भी हमें मानसिक संतुलन नहीं खोना चाहिए। ऐसा करना एक बड़ी समस्या को आमंत्रण देने जैसा है। इसलिए हमें कभी भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

स्व–नियंत्रण के अभाव में मनोरंजन के साधन बने मनोविकार

नीमच-म.प्र.। आज के विज्ञान ने साधन तो दिए लेकिन साधनों के वशीभूत होते जाने से जीवन से संस्कार समाप्त होते जा रहे हैं। टी.वी, मोबाइल, सोशल मीडिया के इर्द-गिर्द जीवन बन गया है। जिससे चरित्र का पतन होने से आज का व्यक्ति सिर्फ एक चित्र रह गया है। इसका परिणाम यह हुआ कि समूचे विश्व में क्रोध, तनाव, अशांति, अश्लीलता बढ़ गयी है जिससे महिलायें असुरक्षित महसूस कर रही हैं। सुरक्षित और महिलाओं के प्रति सम्मानयुक्त भाव प्रदान करने वाला 'समाज' का निर्माण हो इसलिए महिलाओं को ही समाज में आध्यात्मिक मूल्यों को रोशन करने के लिए आगे आना होगा। नीमच में महिला सशक्तिकरण सम्मेलन में आयोजित 'वर्तमान परिवेश में नारी की भूमिका' विषय पर राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी ने महिलाओं का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि आज के मनोरंजन के साधन उचित समय पर उचित उपयोग न करने से मनोविकार के साधन बनकर रह गये हैं। अनिद्रा

को भी हम इन साधनों के अनुचित उपयोग करने का दुष्परिणाम कह सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आधुनिक साधनों, आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स जैसे तंत्र ज्ञान को मनुष्यों ने ही विकसित किया है परन्तु इन्हीं साधन, तंत्र ज्ञान और विज्ञान ने मनुष्यों के ही बुद्धि को सीमित कर दिया है। इन वास्तविक परिस्थितियों का कारण उन्होंने जीवन से आध्यात्मिक मूल्यों का समाप्त होना बताया। परिवार तथा समाज में भी आपसी मौलिक चिंतन और वार्तालाप समाप्त हो गया है। हम साधनों पर इतने आश्रित हो गये हैं कि इसका उदाहरण बताते हुए उन्होंने कहा कि हम छोटी सी गणना करने के लिए भी कैलक्यूलेटर का सहारा लेते हैं। महिला सशक्तिकरण सम्मेलन में महिलाओं को संबोधित करते हुए उन्होंने उपस्थित महिलाओं से यह प्रश्न भी पूछा कि मोबाइल, टी.वी., सोशल मीडिया का उपयोग करते हुए यदि हम अपनी आध्यात्मिक चेतना और मूल्य जागृत नहीं करेंगे तो यह संसार किस ओर जायेगा? इसके लिए उन्होंने स्व-पर नियंत्रण को ही उचित नियंत्रण-व्यवस्था बताया और साथ में यह भी कहा कि संस्कार जतन से ही रूकेगा चरित्र का पतन। उन्होंने शास्त्रों के संदर्भ देते हुए कहा कि जैसे सरस्वती से विद्या की, लक्ष्मी से धन की और दुर्गा देवी से शक्ति की माँग की जाती है वैसे ही महिलाओं ने परिवार को साधनों का उचित उपयोग करने की शिक्षा, धन का आवश्यकतानुसार उपयोग और दुर्गा बनकर परिवार में आध्यात्मिक मूल्य और संस्कारों को रोशन किया तो वास्तविक रूप से महिला सशक्त होकर अपना आत्म-सम्मान प्राप्त करेगी। इस कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, ब्र.कु. सविता दीदी, ज्ञानोदय विश्व विद्यालय की कुलाधिपति डॉ. माधुरी चौरसिया, आई.एम.ए. अध्यक्षा डॉ.सुजाता गुप्ता, रजनी दत्ता, आशा सूद, सुरजीत कौर, सामाजिक कार्यकर्ता तृप्ति दुआ सहित विविध सामाजिक संगठनों पदाधिकारी महिलाओं ने भाग लिया। ज्ञानोदय ग्रुप द्वारा अथितियों को मोमेन्टो द्वारा और शॉल पहनाकर सम्मानित किया गया।

ध्यान-साधना के आधार से मैंने मौत को हराया

चरखी दादरी-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ सुरक्षा सेवा प्रभाग के सेमिनार में 'भारत को विश्वगुरू बनाने में सेवानिवृत्त सैनिकों की अहम भूमिका' विषय पर ब्रिगेडियर हरबीर सिंह,रोहतक ने कहा कि एक सैनिक के मन में देश सेवा का जज़्बा कूट-कूट कर भरा होता है। यही जज़्बा उनके अन्दर हिम्मत भरता है, जिससे वे देश की रक्षा करते हैं। चाहे बर्फ की चोटियों पर हो या रेगिस्तान की भीषण गर्मियों में। सब सैनिक एक देश प्रेम की भावना से दायित्व निभाते हैं। ब्रिगेडियर हरबीर सिंह ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि बहुत बार ऐसी परिस्थिती आई जब मौत बिल्कुल सामने खड़ी थी। लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। आखिरकार मौत को मुझसे हारना पड़ा। उन्होंने बताया कि मैं रोज़ मेडिटेशन करता था, जिससे मेरा मन बहुत शांत रहता था। इसके कारण कोई भी निर्णय लेना मुझे सहज होता था। आज के संदर्भ में राजयोग मेडिटेशन अनिवार्य है। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया। मौके पर कार्यक्रम संयोजिका ब्र.कु. प्रेमलता बहन ने कहा कि सेना में होते हुए सैनिक पर देश की ज़िम्मेवारियां हैं। ऐसे में आवश्यकता है अपनी सोच को सकारात्मक, मैत्री और प्रेम भाव से भरपूर करने की। जब हर इन्सान की सोच एक-दूसरे के प्रति अच्छी होगी तो देश को एकजुट बनाने का, एकजुट रखने का भाव होगा, तभी देश का हर व्यक्ति तरक्की कर पायेगा। जिला सैनिक बोर्ड संजीव कुमार, गौरव यूनियन के सैनिक प्रधान सोमवीर शर्मा ने समाज कल्याण तथा देश सेवा के कार्यों में जुड़ने की प्रेरणा दी। सभी मेहमानों तथा सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित सेवानिवृत्त सैनिकों का फूलमाला, पटका, तिलक एवं ईश्वरीय सौगात देकर सम्मान किया गया। कुमारी भूवि ने सुंदर नृत्य के द्वारा सभी का स्वागत किया। शारदे स्कूल की बच्चियों ने नृत्य के माध्यम से देश प्रेम की भावना को उजागर किया। इंदौर की ब्र.कु. पूनम ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

विश्व ध्यान दिवस पर...

लोगों ने जीवन में राजयोग को 'एक कला' बनाया

आबू रोड-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में शांतिवन के कॉन्फ्रेंस हॉल में विश्व ध्यान दिवस पर कार्यक्रम मनाया गया। इस दौरान ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने राजयोग मेडिटेशन कर विश्व को शांति, सद्भावना, एकता के लिए शुभ वायब्रेशन दिए। इसके अलावा ब्रह्माकुमारीज़ के विश्वभर के 140 देशों में स्थित 6 हजार से अधिक सेवाकेंद्रों पर ध्यान दिवस मनाया गया। इसमें सामूहिक रूप से योगाभ्यास, राजयोग अनुभूति का अभ्यास कर लोगों को ध्यान का संदेश दिया गया। इस मौके पर संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का मुख्य आधार ही योग है। राजयोग मेडिटेशन का यह कमाल है कि आज लाखों लोगों ने इसे जीवन का एक हिस्सा बनाकर इसे एक कला के रूप में लिया है। इस साधना की ताकत से हम विश्वगुरू बनकर पूरे विश्व का नेतृत्व कर सकते हैं।

आज आनंद और उत्सव का दिन है - अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने योग के महत्व को समझते हुए 21

ब्रह्माकुमारीज़ ने मनाया विश्व शान्ति दिवस

- 140 देशों में मनाया विश्व ध्यान दिवस
- 6000 लोगों ने किया मेडिटेशन
- मेडिटेशन द्वारा फैलाया विश्व शान्ति के लिए प्रकम्पन

दिसम्बर को 'विश्व ध्यान दिवस' मनाने की घोषणा की, इसलिए यह दिन सबके लिए खुशी, आनंद और उत्सव का दिन है। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका व गीता विशेषज्ञ राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ का यह फैसला सम्पूर्ण विश्व को शांति और सद्भावना की ओर ले जाने वाला है। आज विश्व को सबसे ज़्यादा शांति की आवश्यकता है। आगे बताया कि श्रीमद्भगवद् गीता के छठे अध्याय में ध्यान की विधि को बहुत ही स्पष्ट रीति से बताया गया है कि हे अर्जुन, आत्मा ही स्वयं का शत्रु और स्वयं का मित्र है। जब नकारात्मक प्रभाव में आकर हम यह भूल जाते हैं कि मैं चैतन्य शक्ति आत्मा हूँ तो वह नकारात्मकता के प्रभाव में आ जाता है। मैं आत्मा चैतन्य शक्ति हूँ, ब्रह्माण्ड निवासी हूँ और सुख, शांति, पवित्रता से भरपूर हूँ। यह मेरे निजी गुण हैं। जब हमें इन बातों का ध्यान रहता है तो आत्मा सकारात्मकता से भर जाती है।

मनुष्य की बेलगाम इच्छाएं कर रहीं तनाव पैदा

रायपुर-छ.ग.। शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में विश्व ध्यान दिवस पर समारोह में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. चन्द्रकला दीदी ने कहा कि वर्तमान भौतिक युग में लोगों की आकांक्षाएं बढ़ती जा रही हैं। इन बेलगाम इच्छाओं के कारण जीवन में तनाव बढ़ रहा है और तनाव के कारण लोग अनेकानेक बिमारियों के शिकार होते जा रहे हैं। जीवन में तनाव को दूर करने का सबसे अच्छा साधन मेडिटेशन यानी ध्यान करना है। उन्होंने राजयोग मेडिटेशन का उल्लेख करते हुए बताया कि इससे मन शान्त होता है और एकाग्रता बढ़ती है। ध्यान से हमें शारीरिक और मानसिक लाभ तो होता ही है। परस्पर एकता और सद्भावना भी जागृत होती है। राजयोग से हमें आत्म निरीक्षण का अवसर मिलता है। हार्टफुलनेस मेडिटेशन के ज़ोनल को आर्डिनेटर एवं प्रशिक्षक देवनारायण शर्मा ने कहा कि विश्व में उथल-पुथल मची हुई है। कई देश अहंकार और दुर्भावना के कारण

आपस में लड़ रहे हैं। ऐसे माहौल में आन्तरिक शान्ति और वैश्विक सद्भावना की बहुत अधिक ज़रूरत है जोकि एकमात्र ध्यान साधना के माध्यम से ही सम्भव है। उन्होंने अलग-अलग ध्यान पद्धति के साधकों को एक मंच पर लाने के ब्रह्माकुमारीज़ के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ध्यान करने से जीवन में परिवर्तन आता है। एक व्यक्ति के ध्यान करने से पूरे घर के वातावरण में शुद्धता आ जाती है। योग-आयोग के मुख्य प्रशिक्षक प्रो. छबि राम साहू ने महर्षि पतजंलि द्वारा सिखाए गए अष्टांग योग की चर्चा करते हुए कहा कि ध्यान का अभ्यास देवत्व को जागृत करने का प्रयास है। आन्तरिक शान्ति से ही विश्व में सद्भावना आ सकती है। उन्होंने यम, नियम, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान की चर्चा करते हुए बताया कि ध्यान साधना हमारे विचारों पर नियंत्रण करने की कला है। ब्र.कु. रूचिका ने योग कराया।

आध्यात्मिकता निष्पक्ष रहना सिखाती

सम्बलपुर-ओडिशा। पावन सरोवर में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा स्वस्थ एवं न्यायपूर्ण समाज' विषय पर राष्ट्रीय न्यायविद सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में ओडिशा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश शशिकांत मिश्र ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण का तात्पर्य है स्वयं को पहचानना। न्याय में हमें निष्पक्ष होना होता है और आध्यात्मिकता हमें निष्पक्ष रहना सिखाती है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दी गई शिक्षा से हम न्यायपूर्ण रहकर एक अच्छी और नई व्यवस्था का स्वरूप समाज को दे सकते हैं। ओडिशा मानवाधिकार कमिशन के मुख्य न्यायमूर्ति शत्रुघ्न पुजारी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के आधार से अगर हम आध्यात्मिकता को अपने जीवन में अपनाते हैं तो हम न्याय व्यवस्था को भी सुधार सकते हैं। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश बी.डी. राठी ने कहा की आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए हमें अपना दृष्टिकोण सकारात्मक

करना होगा। क्योंकि हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक होगा तो हम समाज में फैली हुई नकारात्मकता को नहीं देखेंगे। अभी सकारात्मक विचारधारा के अभाव में

- **ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा न्यायविद सेमिनार का आयोजन**
- **आध्यात्मिकता हमारे में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती**
- **न्यायविद प्रोफेशन में आध्यात्मिकता को अपनाएं**

मानसिक रोगों का विस्तार हो रहा है। न्यायविद प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. लता ने कहा कि आत्मा और परमात्मा का संबंध ही आध्यात्मिकता है जहाँ से हमें सुख और शांति प्राप्त होती है। खुद को समझने और खुद को सशक्त बनाने से हमारे कार्य में सफलता प्राप्त होगी। ब्रह्माकुमारीज़ सम्बलपुर उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. पार्वती दीदी ने कहा कि कर्म के आधार पर हमें फल मिलता है, अच्छे कर्म का अच्छा और बुरे कर्म का बुरा फल भोगना पड़ता है। इसलिए हर कर्म को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सोच समझकर करना होगा। प्रारंभ में ब्र.कु. आरती ने अतिथियों का स्वागत किया। ब्र.कु. दीपा ने संस्थान का परिचय दिया और कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। अन्त में बिरमहाराजपुर की सिनियर सिविल जज ब्र.कु. सरोजिनी ने सभी का धन्यवाद किया। एसोसिएशन से 150 न्यायविद इस कार्यक्रम से लाभान्वित हुए।

आस्था के साथ आचरण भी...

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

हम सभी मनुष्य धर्म के हिमायती हैं, होना भी चाहिए क्योंकि समाज में हैं तो धर्म, धारणा और परमात्मा के लिए भाव, निश्चित रूप से हम सबकी आधारभूत प्राकृतिक नेचर है, होनी ही चाहिए। लेकिन एक अन्दर सवाल उठता है और वो बड़ा सहज है, सरल है और लाज़मी भी है कि हम सभी बहुत समय से तीर्थ स्थान पर जाते हैं, पूजा-पाठ भी करते हैं, सब कुछ कर रहे हैं लेकिन हमारे घर के सदस्य जो हमारे साथ रहते हैं वह हमें बीच-बीच में यह भी कहते हैं कि आप इतने समय से सारा कुछ परमात्मा के भजन में, परमात्मा के प्यार में, परमात्मा के लिए पूजा करते हैं, पाठ करते हैं, कीर्तन करते हैं, मेडिटेशन करते हैं, लेकिन परिवर्तन का भाव थोड़ा कम दिखता है।

जब वह यह कहते हैं तो एक प्रश्न ज़रूर उठता है, प्रश्न चिन्ह भी लगता है कि क्या मैं सही नहीं चल रहा? तो इसको चेक कैसे करना चाहिए क्योंकि आस्था बहुत अच्छी चीज़ है, भावना बहुत अच्छी चीज़ है लेकिन उसके साथ-साथ हमारे अन्दर परिवर्तन भी हो तो सोने पे सुहागा होगा। इसीलिए कहा जाता है कि के बाद भी अगर मेरा ग्राफ नहीं उठता है तो केवल मैं कर्म कांड या केवल नियम

व्यक्ति का जो खुशी का जो ग्राफ है, हैप्पीनेस का जो ग्राफ है वो ऊँचा उठना चाहिए। लेकिन अगर पूजा-पाठ करने के बाद, भक्ति करने के बाद, यात्रा करने प्रमाण सब कुछ करता हूँ। लेकिन अगर सच में मेरे अन्दर परिवर्तन है तो मेरा खुशी का ग्राफ बढ़ना चाहिए। कहने का भाव ये है कि हमारी भावना क्या सच में भगवान के लिए है! अगर भगवान के लिए भावना है तो भगवान के बच्चों के लिए भी भावना होनी चाहिए। भगवान की एक-एक चीज़ के लिए भावना होनी चाहिए हमारी। लेकिन हमारी भावना भगवान से अलग कहीं और तो नहीं है? जैसे नियम प्रमाण उठना, मन्दिर जाना, बैठना, जल्दी-जल्दी सारे काम करना, माला-मूर्ति इन सबके लिए, बार-बार उनकी धुलाई करना, सब कुछ करना, तो क्या सिर्फ इसके लिए हमारी भावना है या भगवान के लिए भी है, ये सोचने का विषय है।

अगर सच में मेरे अन्दर परमात्मा के लिए भावना है तो मेरे अन्दर परिवर्तन आना चाहिए। क्योंकि परमात्मा तो सबके बारे में अच्छा सोचता है, सबके बारे में अच्छे भाव रखता है लेकिन क्या मेरे अन्दर सबके लिए अच्छे भाव हैं? सबके लिए अच्छी बातें हैं? अगर भाव और भावना है तो इसका मतलब मैं सच में आस्था रखता हूँ। सच में परमात्मा के साथ, सच में मेरे अन्दर परिवर्तन है। और जैसे ही कोई समस्या आती है तो देखो हम सबसे पहले किसके पास जाते हैं, आस-पास लोगों के पास ही तो जाते हैं ना! क्योंकि परमात्मा तो ऐसे नहीं दिखाई देता। लेकिन अगर हमारी भावना उनके लिए नहीं है और सारे मनुष्य मात्र के लिए नहीं है, ह्यूमैनिटी के लिए नहीं है तो हमारा साथ कौन देगा? इसलिए मनुष्य एक प्रमाण है, आस-पास का व्यवहार एक प्रमाण है, हमारा आचरण एक प्रमाण है कि हम सच में परमात्मा के लिए भावना रखते हैं। अगर आचरण, व्यवहार में परिवर्तन नाम मात्र है तो भावना शायद मन्दिर और मूर्ति के लिए सिर्फ रह गई है।

तो इस पर हम सबको इस वर्ष काम करना चाहिए। सच में परमात्मा के लिए रियल भावना पैदा करना चाहिए। परमात्मा गुणों को चाहता है, शक्तियों को चाहता है, सबके अन्दर आत्मिक प्रेम को देखना चाहता है। अगर वो हमारे अन्दर है तो हमारी भावना है। आचरण बदलना चाहिए।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

अनुभव - शोभना दुबे,नागपुर

मैं भी आकांक्षाओं के पंख लगाकर आसमान में उड़ना चाहती थी। लेकिन अवसाद के कारण ऐसा नहीं हो पाया। मेरा विवाह हुआ, एक बच्चा भी हुआ। लेकिन विवाह के बाद भी अवसाद की स्थिति बनी रही। मुझे मनोचिकित्सकों को भी दिखाया गया लेकिन डिप्रेशन की दवाइयां, नींद की दवाइयां खाते-खाते भी उनका कोई असर नहीं हुआ और मेरी स्थिति बिगड़ती ही चली गई। मेरा बेटा, मेरे पति इस परिस्थिति से बहुत परेशान थे। परिवार पर भी इसका बहुत ही बुरा असर पड़ने लगा था। मैं भी इस दलदल में धंसती चली जा रही थी। तभी अचानक मेरी जो छोटी बहन है, मुम्बई में रहती है उसने कहा तुम ब्रह्माकुमारीज़ में जाओ। मैं वहाँ गई, मैंने वहाँ सात दिन का कोर्स किया, वहाँ जाने से मुझे असीम शांति प्राप्त हुई। तीन महीने तक लगातार मुरली सुनी, उसके पश्चात् मेरी नींद की गोलियां, डिप्रेशन की जो गोलियां थी वो छूट गईं। मैं बहुत ही खुशी का अनुभव कर रही हूँ। मेरे जीवन में संस्कार परिवर्तन हुए हैं। मेरे अनुभवों को, मेरे परिवर्तन को देखकर मेरे पति और मेरा बेटा वो भी विद्यालय से जुड़ गये हैं। मेरे जो निकट सम्बन्धी थे उन्हें भी बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसी जो विकट स्थिति थी वो कैसे चेंज हो गई! अब मेरा जीवन स्वर्ग जैसा हो गया है, स्वर्ग जैसा मैं अनुभव कर रही हूँ। और मैं सबको यही सजेस्ट करती हूँ कि एक बार राजयोग का अभ्यास ज़रूर करें। इससे उनके जीवन का अंधकार भी समाप्त हो जायेगा।

प्रश्न : मैं ज्योति हूँ, रांची से। काफी दिनों से मन की स्थिति बहुत खराब है। बात-बात पर चिड़ जाती हूँ। ऑफिस में और घर में कहीं भी मन नहीं लगता है। इस स्थिति को मैं कैसे पार पाऊं?

उत्तर : ज्योति को अपनी ज्योति जगानी पड़ेगी। क्योंकि ये भी एक मन पर बुरी चीज़ों का प्रभाव ही है। मन के अन्दर के जो निगेटिव संस्कार हैं वो काम करने लगे हैं। तो ऐसे में मनुष्यों को ईरीटेशन होता है। फिर कभी-कभी ज़्यादा क्रोध भी आता है। फिर कभी-कभी ज़्यादा एक्सपेक्टेशन्स करने लगते हैं। कभी-कभी टाइम कॉन्शियस हो जाते हैं। मान लो ऑफिस में काम कर रहे हैं, उनका काम पूरा हो गया और उनको दूसरा काम दे दिया तो ईरीटेट हो जाएंगे कि मैंने अपना काम पूरा कर लिया अब मुझे घर जाना था, ये क्या, ये क्या फिर गुस्सा आने लगेगा उन्हें। और इससे पहले तो आपको ये याद रखना पड़ेगा कि इससे आंतरिक शक्तियां बहुत नष्ट होती हैं। क्रोध, ईरीटेशन मनुष्य की विवेक शक्ति को नष्ट करता है। इससे एक बहुत बड़ा नुकसान ये है कि जिसके लिए मनुष्य काम कर रहा है, पैसा कमा रहा है कि वो खुश रहे, वो सुखी रहे, उसके चित्त में शांति रहे, वो सब छूट जाता है पीछे। इसलिए अपने पर थोड़ा-सा ध्यान देकर फिर वो ही काम करेंगे। सवेरे उठते ही याद करेंगे मैं बहुत भाग्यवान हूँ। मैं पीसफुल हूँ। मैं बहुत खुशनसीब हूँ। इस तरह के विचार करेंगे। मुझे तो अपने जीवन की यात्रा का आनंद लेना है। ये जीवन बहुत सुन्दर है। मुझे पीसफुल होना है। मैं तो मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। मैं ईरीटेट कैसे हो सकती हूँ! मैं छोटी-छोटी बातों में अशांत कैसे हो सकती हूँ! मैं नहीं होऊंगी। आज सारा दिन उठते ही संकल्प कर दें, आज सारा दिन ईरीटेशन से मुक्त रहूँगी, एन्जॉय करूंगी, हर कार्य को मैनेज कर लूंगी। इस तरह के विचार आप सवेरे करेंगी, ये स्वमान हुए मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं शान्त हूँ। ये अभ्यास करने से अन्दर की शांति बढ़ेगी, शक्तियां बढ़ेंगी और आप अपने कार्यों को भी मैनेज कर पाएंगी। इससे आपको बहुत फायदा होगा और आपको लक्ष्य बना लेना चाहिए कि ईरीटेट बुरी चीज़ है, इससे कई बीमारियां पैदा होंगी। मुझे इससे जल्दी से जल्दी मुक्त हो जाना है।

प्रश्न : मैं मुकेश श्रीवास्तव हूँ, भोपाल से। मैं पिछले छह मास से ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय से जुड़ा हुआ हूँ। यहाँ आकर मैंने अनुभव किया कि सम्पूर्ण सत्य ज्ञान यही है और यहीं से मुझे सर्व समस्याओं का समाधान मिल सकता है, मुक्ति-जीवनमुक्ति मिल सकती है। पहले मैं ज्योतिष को बहुत मानता था लेकिन ज्ञान मिलने के बाद मैंने अपनी अंगुठियां निकाल दी। लेकिन भ्राता जी ने कहा कि इनका भी प्रभाव होता है। तो क्या वो अंगुठियां मुझे वापिस धारण कर लेनी चाहिए?

उत्तर : नहीं, अब आपको इन अंगुठियों की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि अंगुठियों से भी ज़्यादा पॉवरफुल योग आपने सीख लिया है। उनमें भी वेव्ज़ जाती हैं ग्रहों से और वो हमारे शरीर में पहुंच जाती हैं। और यहाँ डायरेक्ट सर्वशक्तिवान से जो वेव्ज़ हमें आती हैं वो हमारे तन में, मन में, बुद्धि में, ब्रेन में सबमें पहुंच जाती हैं। इसलिए अगर आप राजयोग का अच्छा अभ्यास करेंगे तो इन सबकी कोई ज़रूरत नहीं।

प्रश्न : मैं शबनम कपूर हूँ, पुणे से। वास्तु शास्त्र के बारे में आजकल बहुत चर्चा होती है। क्या सचमुच वास्तु दोष होता है? अगर हाँ, तो क्या राजयोग से इन दोषों को दूर किया जा सकता है?

उत्तर : देखिए, आजकल इनकी ज़्यादा चर्चा है और इसके स्पेशलिस्ट भी बहुत बन गये हैं, हमारे पास भी हैं। हमसे मिलते भी हैं। पहले संसार में बैड एनर्जी बहुत नहीं थी। मनुष्य का जीवन बहुत सात्विक होता था, पवित्र होता था। मनुष्य बहुत चरित्रवान था। लेकिन पिछले 40-50 सालों में युग बदल गया। तो हमारे चारों ओर निगेटिव एनर्जी का जैसे प्रकोप है, एक सागर लहरा रहा है। तो ये प्रवेश करती है घरों में भी। लेकिन बात है कि राजयोग से उसको दूर किया जा सकता है। एक तरफ से दरवाज़ा खुला है और बदबू आ रही है, हमने अगरबत्ती जला दी लेकिन फिर भी हमने दरवाज़ा तो खोल कर ही रखा है। बदबू बहुत आ रही है तो अगरबत्ती की सुगन्ध को वो नष्ट कर डालेगी ना। हम राजयोग बहुत करते हों लेकिन बैड एनर्जी के लिए हमने दरवाज़े खुले रखें हों तो हमारा राजयोग भी निष्प्रभावी हो जाता है। और फिर राजयोग इसके लिए ज़्यादा चाहिए। आठ घंटे कम से कम रोज़। ऐसा तो लोग कर नहीं पाते। आधा घंटा भी नहीं कर पाते हैं। इसलिए वास्तु शास्त्र के अनुसार जो छोटे-मोटे करेक्शन घरों में करने चाहिए वो अवश्य कर लेने चाहिए। जैसे मान लो दरवाज़े के पास ही प्रवेश किया वहीं बाथरूम बनाया गया है, टॉयलेट बनाया गया है, इसका देखिए कारण क्या है? आपने दरवाज़े पर ही डस्टबीन रखा है बड़ा-बड़ा। एक व्यक्ति बाहर से आया तो आते ही क्या करेगा कि बदबू। तो एक बैड वायब्रेशन के साथ मनुष्य ने आपके घर में प्रवेश किया।

एक व्यक्ति आता है आपके घर के सामने फूल खिले हुए हैं, तुलसी की महक आ रही है, रात की रानी की महक आ रही है तो उसके कैसे हाव-भाव होंगे। अहा... क्या सुन्दर है! गुड वायब्रेशन्स के साथ घर में प्रवेश करेगा। इसलिए उन्हीं स्थानों को हटवा दिया जाता है। बस, ये है। कई बार ये भी कहा जाता है कि बिना तोड़-फोड़ के भी कुछ चीज़ें कर ली जाएं तो ठीक होता है। क्योंकि हरेक के लिए सम्भव नहीं होता है कि वो तोड़-फोड़ कर पाएं। ऐसे भी स्पेशलिस्ट हैं जो छोटी-छोटी पिरामिड, स्वास्तिक, शंख, नमक चीज़ें फिट करा देते हैं और वास्तु दोष समाप्त हो जाता है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

ईश्वरीय नशा कम होने के कारण

करेक्शन हमें दूसरों की नहीं स्वयं की करनी है

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

जैसा कि आपने पिछले अंक ओम-19 में पढ़ा कि दूसरों को देख उनकी कमज़ोरियों को फॉलो नहीं करना, उनकी कमज़ोरियों को देखकर वो कमज़ोरी मेरे अन्दर तो नहीं है ये चेक कर लेना और उसको चेंज कर देना। ये आवश्यक होता है। अब आगे पढ़ेंगे...

तीसरी बात होती है प्रश्न उठना। ये बाबा के महावाक्य हैं। इसपर पूरी मुरली चली थी। प्रश्न बहुत उठाते हैं दूसरों के प्रति, अपने प्रति नहीं कि मेरे मन में बहुत ऊंचा लक्ष्य था, मैं ये क्या कर रहा हूँ। दूसरों के लिए क्वेश्चन करेंगे कि यज्ञ में ये ऐसा क्यों कर रहे हैं? यज्ञ में फलाना भाई इतना पुराना है वो ऐसा क्यों कर रहा है, फलानी टीचर भी ऐसे बोलती है मुझे तो। क्यों, क्या। क्या होगा ये क्यों, क्या बाबा के शब्दों में ये क्वेश्चन मार्क टेढ़ा है ना, फुल स्टॉप तो सीधा है। क्वेश्चन मार्क टेढ़ा है तो स्थिति को भी टेढ़ा कर देता है। सारी स्थिति लॉप होने लगती है। जितने क्वेश्चन मन में उठेंगे भगवान के शब्द हैं कि प्रश्न जितने मन में उठेंगे प्रसन्नता उतनी ही खत्म होती जायेगी। जहाँ प्रश्न बहुत हैं वहाँ प्रसन्नता नहीं है। प्रश्न माना क्वेश्चन, प्रसन्न माना हैप्पीनेस, चीयरफुलनेस। तो ज्ञान के क्वेश्चन उठाना वो एक अलग बात है, उससे तो हमारा ज्ञान बढ़ेगा। लेकिन व्यवस्था में और दूसरों के पुरूषार्थ को देखकर इस संसार में जो कुछ हो रहा है उसको देखकर कि ये क्यों हो रहा है? बाबा ऐसा क्यों नहीं करता है। ये सब बातें मन को भटका देती हैं। अगली बात बाबा ने कही, और ये बिल्कुल सत्य नज़र आती है। करेक्शन करना। दूसरों को करेक्ट ज़्यादा करने लगते हैं, अपने को करेक्ट करना है ये भूल जाते हैं। दूसरों को सम्पूर्ण बनता हुआ देखना चाहते हैं। मैं भले ही पीछे रह जाऊं। गलत मानसिकता हो गई है। ये

परदर्शन कहते हैं- दूसरों को देखना, उनकी बुराइयां देखना, उनमें क्या-क्या कमज़ोरियां हैं, कहाँ-कहाँ ढीले हैं, ये देखना, परदर्शन और परचिंतन। दूसरों के बारे में बहुत सोचना। व्यर्थ चिंतन जिसे कहते हैं। कम्पलेंट के साथ ये दोनों भी चलते हैं।

भूल गये हैं कि कलियुग के अंत में सभी आत्माएं नीचे उतर आई हैं, कोई भी सम्पूर्ण नहीं है। किसी में कोई कमी है, किसी में कोई कमी। करेक्शन तो हमें खुद को करना है। दूसरों के पुरूषार्थ को तो हमें साक्षी होकर देखना है। और अगर हमारा उनसे प्यार है, तो उन्हें वायब्रेशन देकर या शब्दों से उमंग-उत्साह दिलाना है, मोटिवेट करना है। करेक्शन देते रहने से अपना कनेक्शन शिव बाबा से टूट जाता है।

बहुत सुन्दर शब्द भगवान ने बोले कि अगर तुम करेक्शन के चक्कर में पड़ गये, ये चक्रव्यूह है तो दूसरों को ही देखते रहोगे। और फिर शिव बाबा से कनेक्शन कट ऑफ हो जायेगा और तुम्हारी स्थिति दिनोंदिन डाउन होती जायेगी। अगली बात बताई कम्पलेंट्स करना, दूसरों पर ब्लेम लगाना। इसमें भी ये दिखाई देता है ऐसी आत्माओं को। गुह्य ज्ञान नहीं है। इस विश्व ड्रामा की भी सम्पूर्ण नॉलेज नहीं है। वे दूसरों के बारे में ज़्यादा सोचते हैं, परचिंतन ज़्यादा करते हैं। परदर्शन कहते हैं- दूसरों को देखना, उनकी बुराइयां देखना, उनमें क्या-क्या कमज़ोरियां हैं, कहाँ-कहाँ ढीले हैं, ये देखना, परदर्शन और परचिंतन। दूसरों के बारे में बहुत सोचना। व्यर्थ चिंतन जिसे कहते हैं। कम्पलेंट के साथ ये दोनों भी चलते हैं। इसलिए खुशी का पारा डाउन होता रहता है। स्थिति बिगड़ती जाती है। मन निराश हो जाता है। सभी ऐसे ही हैं। कोई तो अच्छा पुरूषार्थी मुझे नहीं मिलता।

कोई कह रहा था कि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो ज्ञान मार्ग पर चलते सम्पूर्ण सत्य हो। हमारी एक बहन ने उसे बहुत अच्छा उत्तर दिया कि नहीं मिला ना, बहुतों को खोज है इसकी, तुम बन जाओ। तो बहुतों की खोज समाप्त हो जायेगी। तो उसे लज्जा आ गई कि शायद मैं भी नहीं हूँ। उसने तो सोचा था कि दूसरे ही नहीं हैं। अगर हमें निरन्तर खुशी में, उमंग-उत्साह में, प्राप्तियों की अनुभूतियों में मगन रहना है तो एक महान लक्ष्य को अपने सामने रखकर चलें। मुझे ये प्राप्त करना है, मुझे और कुछ नहीं देखना है। जैसे होशियार स्टूडेंट कभी कमज़ोर विद्यार्थियों को देखकर अपने को कमज़ोर नहीं करते। उन्हें तो लक्ष्य रहता है कि मुझे तो 95 प्रतिशत मार्क्स लाने हैं। बस वही सामने है। और कौन क्या कर रहा है उसको वो नहीं देखते। हम भी गॉडली स्टूडेंट हैं, पास विद ऑनर होना है, महान स्टेटस को प्राप्त करना है, इसलिए उस लक्ष्य को सामने रखते हुए और कुछ नहीं देखते हुए उमंग-उत्साह से निरंतर अपने लक्ष्य की ओर चलेंगे। तब ये जीवन सफल होगा।

नागठाणे-महा.। महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री छत्रपति शिवेंद्र राजे भोसले से उनके सतारा के निवास स्थान पर जाकर ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. सुवर्णा। साथ है ब्र.कु. लक्ष्मी।

नई दिल्ली। बेल्ला माऊंड होटल में ओमशान्ति मीडिया के संपादक राजयोगी ब्र.कु.गंगाधर ने महाभारत धारावाहिक में दुर्योधन के चरित्र के रूप में ख्याति प्राप्त अभिनेता तथा निर्देशक पुनीत इस्सर से स्नेहभरी मुलाकात की तथा उन्हें संस्था की गतिविधियों से अवगत कराने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट की और माउण्ट आबू आने का निमंत्रण भी दिया। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जया,लाजपत नगर,दिल्ली, ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके तथा ब्र.कु. विकास।

खरोरा-छ.ग.। विधायक अनुज शर्मा को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. उमा एवं ब्र.कु. सावित्री।

अव्यक्त मुरली 04-11-2001 (पहेली-10)2024 -25

ऊपर से नीचे

1. अभी हद की छोटी-छोटी बातों में, स्वभाव में, ... में समय नहीं गंवाओ।(3)
2. बापदादा को ..... करने का सहज साधन है "सच्ची दिल"।(2)
3. राजा का पुत्र, राजकुमार, शाहज़ादा(4)
4. राजयुक्त कभी भी अपने स्व-स्थिति से नाराज़ नहीं होगा अर्थात् दिलशिकस्त नहीं होगा और संकल्प में भी, वृत्ति से भी, ... से भी, दृष्टि से भी किसी को नाराज़ नहीं करेगा।(2)
5. प्रतिज्ञा, संकल्प (2)
7. ब्राह्मणों के जो विशेष संस्कार वा स्वभाव है - रहमदिल, ... के वह इमर्ज होंगे और होना ही ज़रूरी है।(4)
9. जो भी सेवा के ..... बनाये हैं, वह अच्छे बनाये हैं, जो चल रहे हैं वह अच्छे चल रहे हैं।(2)
10. सदा अपने ..... की कैंचिंग पावर, जिसको आप कहते हैं टचिंग, उस टचिंग व कैचिंग पावर का स्विच आन रखो। (2)
11. यह तो हाथों से लिखते हैं, लेकिन पहले दिल का आवाज दिलाराम के पास पहुंच जाता है। यह भी अच्छा है, बापदादा की ..... तो आती है ना! समाचार लिखने के टाइम कितनी खुशी होती है।(2)
13. आसमान, आकाश, नभ।(3)
15 अभी मनाने का और कमाने का युग है, ... करने का युग है।(2)
16 टचिंग व कैचिंग पावर का स्विच आन रखो। ..... कोशिश करती है आफ करने की, सेकण्ड में आफ करके चली जाती है।(2)
17. कई बच्चे रूहरूहान में कहते हैं-बापदादा तो शक्तियां देता है लेकिन ..... पर शक्ति यूज़ नहीं होती।(3)
18. बच्चे हाथों से लिखते हैं, लेकिन पहले दिल का आवाज ..... के पास पहुँच जाता है।(4)
19. सरिता, तटिनी।(2)
20. आदमी, पुरूष।(2)

बायें से दायें

1. कौन सा वर्ष मनाया है? संस्कार से ..... परिवर्तन का। पक्का है ना! (3)
2. जो सच्ची दिल वाला है, वह सदा संकल्प, वाणी और कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में ..... होगा।(4)
5. इस समय आप हर एक को, आत्माओं ..... रहमदिल और दाता बन कुछ न कुछ देना ही है। (2)
6. मनोहर, रम्य और सुहावन।(4)
8. राजयुक्त कभी भी अपने स्व- स्थिति से ..... नहीं होगा अर्थात् दिलशिकस्त नहीं होगा। (3)
10. बापदादा ने पहले भी कहा कि आप सबने वर्ष क्यों ..... है? संस्कार से संसार परिवर्तन का। ..... है ना!(3)
12. बापदादा ने देखा कि सेवा में ..... भी है और सेवा की गति में तीव्रता भी है।(3)
14. प्रोग्राम जो भी चलता है, उसमें सिर्फ समय प्रमाण टॉपिक को उसी रूप से रखना ज़रूरी है क्योंकि जिस समय किसको पानी की प्यास है, और आप उसको 36 प्रकार का ..... दे दो तो वह स्वीकार करेगा?(3)
19. अगर नयनों में निरन्तर बाप बिन्दी समाया हुआ है तो और किसी तरफ भी ..... आकर्षित नहीं होंगे।(3)
21. आप राइट हैण्डस का यादगार है। पता है कौन सा यादगार है? ..... रूप का चित्र देखा है।(3)
22. ..... बनो और समय प्रमाण रहमदिल बन बेहद की वृत्ति, दृष्टि और कृत्ति बनाने के दृढ़ संकल्प का दीप जलाओ।(4)

09/25- पहेली का उत्तर
(अव्यक्त मुरली 20-02-2001)

ऊपर से नीचे: 1.त्रिलोकीनाथ, 2. अभिमान,3. कल्याण, 4. विशेषता, 5. मेम्बर, 6. मान, 7. व्रत, 9. हलचल, 11. नाविक, 12. जीवनमुक्ति, 14. सफलता, 17.दिन।

बायें से दायें: 1. त्रिमूर्ति, 2. अलौकिक, 5. मेहमानों, 8. तस्वीर, 10. विनाश, 13. चलन, 14. सत्ता, 15. लोक, 16. मन, 17. दिल, 18. कलम, 19. माइट, 20. भक्ति।

गुजरात में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ईश्वरीय सेवाओं के 60 वर्ष के उपलक्ष्य में...

ईश्वरीय सेवाओं के 'हीरक जयंती वर्ष' पर स्नेह मिलन कार्यक्रम से किया आगाज़

के. एस. पटेल सामाजिक प्रभाव पुरस्कार 2024, गुजरात की निदेशका राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी को उनके दूरदर्शी नेतृत्व और आध्यात्मिकता, शांति और सामाजिक सेवा को बढ़ावा देने में अथक प्रयासों के लिए प्रदान किया गया। हैप्पी विलेज कॉम्प्लेक्स की स्थापना सहित उनके प्रयास ने दुनिया भर में अनगिनत व्यक्तियों को सशक्त बनाया और एक स्थायी प्रभाव छोड़ा।

राजकोट-गुज.। त्रंबा के 'हैप्पी विलेज' रिट्रीट सेंटर में हीरक जयंती वर्ष उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारी बहनों के स्नेह मिलन कार्यक्रम का बड़े उमंग-उत्साह के साथ शुभारंभ किया। इस अवसर पर 'वैश्विक शांति एवं सद्भावना' के लिए 1500 ब्रह्माकुमारी बहनों ने सामूहिक रूप से एक साथ दस मिनट तक ओम शांति ध्वनि कर आगाज़ किया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने गुजरात की सेवाओं की सराहना करते हुए शेर पर सवार शिवशक्ति स्वरूपा ब्रह्माकुमारी बहनों को लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा के रूप में वर्णित किया। उन्होंने कहा कि परमपिता परमात्मा शिव की प्रत्यक्षता के लिए गुजरात कोई विशेष सेवा योजना तैयार करे जिसे पूरे भारत में लागू किया जा सके। ब्रह्माकुमारीज़ के गुजरात राज्य की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी ने स्वयं को मजबूत करने के लिए अमृतवेला के मेडिटेशन अभ्यास पर विशेष ज़ोर दिया। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्रामीण विकास विभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु.सरला दीदी ने कहा कि गुजरात पर पूर्वज आत्माओं, महारथी आत्माओं की दुआओं व देश-विदेश की शुभ-भावनाओं व कामनाओं से प्राप्त भूमि है। उन्होंने हीरक जयन्ती वर्ष 2025 में गुजरात के सभी जिलों में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जाने वाली सेवाओं से संबंधित विभिन्न 60 सेवा योजनाओं के कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस मौके पर आर. के. विश्व विद्यालय के निदेशक डेनिस भाई पटेल ने ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम में उपस्थित होना अपने लिए एक गौरव का क्षण बताया और कहा कि संस्था द्वारा की जा रही आध्यात्मिक सेवाओं से यहां के क्षेत्र में मानवीय मूल्यों का प्रचार-प्रसार हो रहा है, जोकि आज मानव के जीवन में बहुत ही आवश्यक है। बहनों के निःस्वार्थ सेवा भाव से हमें सीखने की ज़रूरत है। कार्यक्रम की शुरूआत एंजल ग्रुप के स्वागत नृत्य से हुई। इसके अलावा नृत्य नाटिका और दीपक रास की प्रस्तुति हुई। विभिन्न राज्यों से आईं वरिष्ठ राजयोगिनी दीदीयों सहित सभी ब्रह्माकुमारी बहनों का भव्य स्वागत किया गया। श्वेत वस्त्रों व गोल्डन ताज से सु-सज्जित राजयोगी बहनों की दिव्यता सभागार में प्रमुख आकर्षण देखते ही बनी। कार्यक्रम में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री भानुबेन बाबरिया, मेयर नयनाबेन पेधड़िया, गुणवंत भाई, भीखू भाई विरानी, युवा नेता किशोर भाई राठौड़, पंचशील स्कूल के डी.के.वडोदरिया, प्राध्यापक, चिकित्सक, उद्योगपति आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सतयुग चमत्कार से नहीं, आंतरिक परिवर्तन से आयेगा

प्रयागराज-उ.प्र.। आज भारत विश्व गुरू बनने की राह पर है, सारी दुनिया में इस बात की चर्चा है। परन्तु साथ में दुनिया की स्थितियां ऐसी है कि हर कोई सोच रहा है अब पता नहीं क्या होगा। शास्त्रों में कहा गया है कि सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग क्रम से आते हैं। अब फिर सतयुग आने वाला है। परन्तु सतयुग कोई बाहर के परिवर्तन से या चमत्कार से नहीं आयेगा, हमारे आंतरिक परिवर्तन से आयेगा। न्यू कैंट स्थित पोलो ग्राउंड में 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा खुशहाल जीवन' विषय को इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी बहन ने सम्बोधित करते हुए कहा। उन्होंने आगे कहा कि जब एक परिवार में लोग एक-दूसरे को प्यार देते हैं, सम्मान देते हैं, खुशी देते हैं तो कहते हैं कि इनका परिवार तो जैसे स्वर्ग है। इस तरीके से संसार में सतयुग भी हम ही अपने कर्मों द्वारा लायेंगे। जैसे शरीर फिटनेस के लिए हम बीच-बीच में स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज़ आदि करते हैं, इसी तरह बीच-बीच में यदि हम अपने मन को शांत कर परमात्मा से शक्ति लें तो हम मानसिक तौर पर लंबे समय के लिए स्वस्थ रह सकते हैं। फरिश्ते की विशेषता बताते हुए उन्होंने कहा कि फरिश्ता वह है जो निःस्वार्थ भाव से किसी की समस्या को खत्म कर दे, भले ही उस व्यक्ति से उसका कोई लेना-देना भी ना हो। हम रिश्ते में आते हैं क्योंकि हमें कुछ चाहिए, हमारे रिश्ते बिगड़ते हैं क्योंकि हम कहते हैं कि रिश्ते में हमें प्यार नहीं मिल रहा, हमको उनसे सम्मान नहीं मिल रहा है, परन्तु क्या हम फरिश्तों की तरह निःस्वार्थ भाव से देते भी हैं? धन देना बड़ी बात नहीं है लेकिन क्या हम दूसरों को निःस्वार्थ भाव से प्यार, शुभ भावना, धैर्य, हिम्मत देते हैं? शिवानी बहन ने अपने मन के ऊपर भी ध्यान रखने के लिए कहा। जैसे एक सफेद कपड़ा यदि हम दिन भर पहन के रखें तो शाम तक गंदा हो जाएगा। यदि हम ध्यान देते रहें तो कम से कम हम उसपर दाग नहीं लगने देंगे। इसी तरह हम अपने मन पर क्रोध का, लालच का, आलस्य आदि का दाग लगने न दें तो हम अपने मन को भी स्वच्छ रख सकते हैं और जीवन में सुख-शांति का अनुभव कर सकते हैं। हमारे भाग्य के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि लोग कहते हैं भगवान भाग्य लिखता है लेकिन वास्तव में भगवान भाग्य नहीं लिखता, हम ही अपने कर्मों के द्वारा अपना भाग्य स्वतः लिखते हैं। भगवान हमें हिम्मत देता है, ताकत देता है, साथ देता है एक मां की तरह, एक पिता की तरह। इसलिए शिवानी बहन ने अपने आप को परिवर्तन करने पर विशेष ध्यान दिलाया और दिन में बीच-बीच में मेडिटेशन करने की सलाह भी दी। कार्यक्रम में वरिष्ठ न्यायमूर्ति मनोज कुमार गुप्ता, न्यायमूर्ति मंजू रानी चौहान, पूर्व सांसद केसरी देवी पटेल, लोकसेवा आयोग के सदस्य कल्पराज सिंह, उत्तर मध्य रेल्वे के जीएम उपेंद्र जोशी, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति प्रकाश पाड़िया, न्यायमूर्ति समित गोपाल, न्यायमूर्ति दीपक वर्मा, पूर्व शिक्षा मंत्री नरेंद्र सिंह गौर सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

जीवन में अपनाने योग्य बातें:

- जब एक परिवार में लोग एक-दूसरे को प्यार देते हैं, सम्मान देते हैं, खुशी देते हैं तो कहते हैं इनका परिवार तो जैसे स्वर्ग है। इस तरीके से संसार में सतयुग भी हम ही अपने कर्मों द्वारा लायेंगे।
- कहते हैं भगवान भाग्य लिखता है परन्तु वास्तव में भगवान भाग्य नहीं लिखता लेकिन हम ही अपने कर्मों के द्वारा अपना भाग्य स्वतः लिखते हैं। भगवान हमें हिम्मत देता है, ताकत देता है, साथ देता है एक मां की तरह, एक पिता की तरह।
- फरिश्ता वह है जो निःस्वार्थ भाव से किसी की समस्या को खत्म कर दे, भले ही उस व्यक्ति से उसका कोई लेना-देना भी ना हो।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th Jan, 2025
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org